1 ⇒ राजस्थान के लोक देवियाँ देवता :- पेज 1-5 (लोकदेवियां 1-5) लोकदेवतापेज → 6-10
2 ⇒ राजस्थान के संत व सम्प्रदाय :- 11-
3 → राजस्थान के प्रमुख त्यौहार
4 → राजस्थान के प्रमुख मेले।
5 → राजस्थान के प्रमुख लोक नृत्य।
6 → राजस्थान के प्रमुख लोक नाट्य।
7 → राजस्थान के प्रमुख वाद्य यंत्र।
8. राजस्थान की प्रमुख बोलियाँ।
9. राजस्थान की प्रमुख जन जातियाँ।
10. राजस्थान में प्रचलित प्रमुख प्रथाएं।
11. राजस्थान की प्रमुख वेशभूषा।
12. राजस्थान के प्रमुख दुर्ग
13. राजस्थान के प्रमुख साहित्य

Scanned by CamScanner

Notes

राजस्थान की लोक देवियाँ :-

(i) नागणेची माता :-
- मण्डोर (जोधपुर)
- 18 भुजाओं वाली देवी
- जोधपुर के राठोड़ों की कुल देवी

2. चामुण्डा देवी :-
- मेहरानगढ़ (जोधपुर)
- जोधपुर के राठोड़ो की कुल देवी

3. सच्चियाय माता :-
- औसियां (जोधपुर)
- ओसवालों की कुल देवी

4. लटियाल माता :-
- फलौदी (जोधपुर)
- देवी के खेजड़ी वृक्ष की पूजा की जाती है।

5. आई माता
- बिलाड़ा (जोधपुर)
- सिरवी जाति की कुल देवी
- माता के मंदिर के दीपक की ज्योति से केसर निकलती है।
- भक्त मंदिर को दरगाह कहते हैं।
- रामदेवजी की शिष्या.
- मानी देवी (नव दुर्गा का अवतार

6. स्वांगिया माता / आवड़ माता :-
- जैसलमेर
- भाटी राजवंश की कुल देवी, तेमड़ी पर्वत
- सुगन चिड़िको आवड़ माता का स्वरूप माना जाता है।

7. हिंगलाज माता :-
- लोद्रवा (जैसलमेर)
- भाटी राजवंश की आराध्य देवी

8. तनोट देवी :-
- जैसलमेर
- सैनिकों की कुल देवी, थार की वैष्णो देवी

9. आबुर्दा देवी
- माउन्ट आबू - सिरोही - राज० में सर्वाधिक ऊंचाई पर स्थित मंदिर
- राजस्थान की वैष्णो देवी

Pawan Saini 7568305710

Scanned by CamScanner

10. कुशाल माता
- भदनौर
- निर्माता → कुम्भा
- मालवा विजय पर निर्माण

11. सुगन्धा देवी
- जालौर
- राज० की पहली रोप वे / उड़न खटोला देवी।

12. आशा माता
- जालौर
- सोनगरा – चौहानों की कुल देवी

13. बाण गंगा देवी
- उदयपुर
- सिसोदिया राजवंश की कुल देवी

14. छींछ देवी
- बाँसवाड़ा
- मंदिर में ब्रह्मा जी की मूर्ति लगी हुई

15. तुरतई / त्रिपुरा देवी
- तिलवाड़ा → बाँसवाड़ा
- आगामी (भूत-पूर्व) वसुन्धरा की कुल देवी

16. चौथमाता :-
- चौथ का बरवाड़ा → सवाई माधोपुर
- कंजरो की कुल देवी
- पुजारी – माली

17. बड़ली माता
- छीपों का अकोला → चित्तौड़गढ़
- बेड़च नदी के किनारे
- माता की ताँती (तावीज) बांधने से बीमार आदमी की ठीक होना

18. आवरी माता
- निकुम्भ (चित्तौड़गढ़)
- लकवे का इलाज

Scanned by CamScanner

19 महाणा देवी
- कोटा
- हाडा राजवंश की कुलदेवी
- मुढ की चपेट में आये व्यक्ति का इलाज

20. ब्राहमनी देवी
- बारां
- देवी के पीठ की पूजा की जाती है।

माघ शुक्ला सप्तमी को गधों का मेला भरता है।

21. राजेश्वरी माता
- भरतपुर
- जाट राजवंश की कुलदेवी

22 अन्नपूर्णा / जमुवाय माता
- जयपुर
- कछवाह राजवंश की कुलदेवी (ढूंढाड़ के)
- निर्माता मंदिर → धौलाराय

23 नकटी देवी
- जयपुर

24 शिला देवी
- आमेर (जयपुर)
- कछवाह राजवंश की कुल देवी
- आमेर के राजा मानसिंह-प्रथम पूर्वी बंगाल के राजा केदार से लाये थे। (1604)

25. नारायनी माता
- बरवा की डुंगरी → राजगढ़ तह० अलवर
- माता की पूजा को लेकर नाईयों / मीणों में विवाद

26. जीण माता
- जन्म → चुरू
- मंदिर → रैवासा - सीकर
- चौहानों की कुल देवी
- वर्तमान में बकरो और शराब के चढ़ावे पर रोक।

27. कैलादेवी
- त्रिकुट पहाडी → करौली
- यदुवंशी की कुल देवी
- लक्खी मेला → चैत्र शुक्ल सप्तमी और अष्टमी
- लोकगीत → लांगुरिया, जोगणिया नृत्य → घुरनकला।

Scanned by CamScanner

28. राणी सती देवी मंदिर
- झुंझुनू
- लोकभाषा में दादी जी कहते हैं।
- अग्रवालों की कुल देवी
- विश्व में सबसे बड़ा सती मंदिर
- भाद्रपद अमावस्या को मेला भरता है।
- 1987 में दिवराला (सीकर) रूप कंवर सती काण्ड के बाद राणी सती के मेले पर रोक
- वास्तविक नाम – नारायणी बाई
- पति का नाम – तनधन दासजी

29 जीण माता (सीकर)
- चौहान वंश की अराध्या देवी
- निर्माण :- चौहान पृथ्वीराज प्रथम के काल में राजा हट्ड द्वारा
- अष्टभुजा वाली देवी

30. करणीमाता, सिद्दीबाई, जोगमाया डोकरी, दाढी वाली देवी
- मंदिर → देशनोक → बीकानेर
- बीकानेर के राठौडो की कुल देवी
- चारणों की कुल देवी
- विश्व में चूहों की देवी से विख्यात
- सफेद चूहों का दिखाई देना काबा कहलाता है।

31. शाकम्भरी माता / सकराय माता
- उदयपुर वाटी – झुंझुनू
- खण्डवालों की कुल देवी
- अकाल के समय अकाल पीडितों को कंद फल-फूल सब्जियाँ प्रदान की थी

32. शीतला माता

शीलकी डुंगरी (चाकसू) – जयपुर
निर्माता – माधोसिंह, पुजारी – कुम्हार, सवारी – गधा
एकमात्र देवी जिसकी खण्डीत रूप में पूजा की जाती है।
मेला → चैत्र शुक्ल सप्तमी अष्टमी

Scanned by CamScanner

Notes

33. आम्बिका देवी (उदयपुर)
→ मंदिर → उदयपुर → शक्तिपीठ
→ "मेवाड़ का खजुराहो" से विख्यात
→ महामारु शैली से निर्मित मंदिर

34 सुगाली माता
→ आऊवा के ठाकुर परिवार की कुलदेवी
→ मारवाड़ की आराध्या देवी
→ दश सिर, चौपन हाथ वाली देवी

35 पथवारी माता — तीर्थयात्रा की कामना हेतु देवी की पूजा की जाती है।

36 ज्वालामाता — जोबनेर
- खंगारोतों की कुलदेवी।

बीजासण / इन्द्रगढ़ माता — बूंदी

Rambabu Saini
7568305710

महत्वपूर्ण बिंदु
Notes

PAGE NO.
DATE : / /

1) नावा → सोने, चाँदी, पीतल की बनी धातुऐं जो देवी-देवताओं के गले में डाली जाती हैं।

2) पर्चा देना → अलौकिक शक्तियों का प्रचार-प्रसार करना।

3) चिरजा → देवी-देवताओं के रात्रि जगा पर गाये जाने वाले गीत (महिलाओं द्वारा)

4) देवरे → लोक देवों के पूजास्थल

Scanned by CamScanner

⇒ राजस्थान के लोक देवता

Notes

1. गोगाजी :-

"सर्पो के देवता, गायों के मुक्तिदाता"

- जन्म → चुरू जिले के ददरेवा गाँव
- जाति → राजपुत , गौत्र — चौहान
- पिता — जेवर , माता → बाछल
- गुरु — गोरखनाथ
- महमूद गजनवी के साथ युद्ध किया। महमुद गजनवी ने ही गोगाजी को "जाहरपीर" की उपाधि दी।
- शीर्ष मेडी — ददरेवा — चुरू
- धुरमेडी या गोगा मेडी — नोहर तह० हनुमानगढ़
- धुरमेडी के निर्माता → फिरोजशाह तुगलक
- आकृति — मकबरानुमा तथा बाहर बिस्मिल्ला अंकीत है।
- थान → खेजडी वृक्ष के नीचे
- भाद्रपद कृष्ण नवमी को मेले का आयोजन

२. पाबूजी :-

"ऊँटो के लोक देवता"

- जन्म — जोधपुर (फलौदी) कोलू गांव
- → पिता → धांधल राठौड , माता — कमलदे
- → पत्नि — अमरकोट की राजकुमारी फूलमदे
- → वीर गति — गायों की रक्षा हेतु 1276 ई०
- → उपासना स्थल — कौलू (फलौदी)
- → घोडी का नाम — केसर कालमी
- → प्रतीक चिन्ह — भाला लिए अश्वरोही
- → ऊँटो के "लोक देवता" से विख्यात
- → लक्ष्मण जी के अवतार
- → सबसे लोकप्रिय फड पाबूजी की है। ऊँट ठीक होने पर आधे कट नारियल से बने बाध यंत्र के साथ पाबूजी की फड़ भोपा व भोपण के द्वारा बोली जाती है।
- → ऊँटो मे एक विशेष प्रकार का रोग "सरा" पाया जाता है।
- → मारवाड में ऊँट लाने का श्रेय पाबूजी को ही जाता है।

Scanned by CamScanner

Pamsaini
7568305710

Notes

3. "रामदेव जी

"एक मात्र देवता जो कवि थे, एक मात्र देवता जिसने मूर्ति पूजा का विरोध किया।"

- "रामसा पीर", "रूणीचा" रा धणी, "बाबा रामदेव"
- जन्म - उंडुकाशमेर गाँव - शिव तह० बाड़मेर
- पिता — अजमल, माता — मैणादे
- पत्नि — नैतलदे, गुरु — बालीनाथ
- सवारी — नीला घोड़ा, लीला
- प्रमुख स्थल - रुणेचा - पोकरण - जैसलमेर
- छोटा रामदेवरा (गुजरात)
- कृष्ण के अवतार माना जाता है।
- मुस्लमान "राम सा पीर" बुलाते है।
- रामदेव जी का पुजारा "रिखीया" कहलाया।
- जागरण को जम्मा कहते है।
- समाधि स्थल — मसूरिया गांव (जोधपुर)
- मेलो में कामड़ जाति की महिलाएं तेरहताली नृत्य करती है।
- कामड़िया पंथ का आरम्भ किया।
- रचित कृति — चौबिस बाणियाँ
- पंचरंगी पताका (झण्डा) — नेजा

4. तेजाजी

"सांपो व काला-बाला के देवता"

- जन्म → खड़ताल — नागौर
- जाति — जाट, गौत्र — धौल्या, पत्नि — पेमल
- पिता — ताहड़जी, माता → राजकुंवरी
- घोड़ी — लीलण (सिणगारी)
- लाछा गुजरी की गायों को छुड़ाने के लिए संघर्ष में किशनगढ़ के पास मृत्यु।
- तेजाजी का स्थान थान कहलाता है। तथा पुजारी घोड़ला होता है।

भाद्रपद शुक्ला दशमी को मेले का आयोजन।
सर्वाधिक आय राज० सरकार को इसी पशु मेले से होता है। यह मेला नागौर में आयोजित होता है।

Scanned by CamScanner

Notes

PAGE NO.: 8

5. हड़बू जी
→ जन्म → मंडेल गॉंव → नागौर
→ पिता —— मॉंगलिया
→ गुरु —— बालीनाथ
→ मुख्य स्थान —— बेगटी गॉंव (फलौदी, जोधपुर)
→ रामदेव रामदेव के मौसेरे भाई थे।
→ शकुन शास्त्र के ज्ञाता
→ पुजारे —— सांखला राजपुत
→ अपंग गायो के लिए चारा लाते थे।
→ श्रद्धालु बैलगाडी की पुजा करते है।

6. कल्ला जी
"नागराज के अवतार"
"चार हाथों वाले देवता"
→ जन्म —— मेड़ता —— नागौर
→ पिता —— आशसिंह —— बुआ → मीरा
→ चाचा —— जयमल —— गुरु —— भैरवनाथ
→ "चितौड़ पर मुगलो के आक्रमण करने पर मेवाड़ी सेना के साथ लड़ते हुये वीरगति को प्राप्त हुई"
→ "युद्ध में चार हाथों से लड़ने के कारण इतिहास में चार हाथों वाले देवता के रूप में पुजा।"

7. मल्लीनाथ जी :-
→ जन्म —— (बाड़मेर) मारवाड़
→ मुख्य मंदिर —— तिलवाड़ा (बाड़मेर)
→ मेला —— चैत्र शुक्ल कृष्णा एकादशी से 15 दिन तक
→ इनकी वीरता व ईश्वरीय गुणों से प्रेरित होकर बाड़मेर का नाम इनके नाम पर मालानी रखा।
→ मालानी नस्ल का घोड़ा पुरे भारत मे प्रसिद्ध है।

Note :- आलम जी का धोरा, बाड़मेर में घोड़ियों के प्रजनन के लिए विश्व में ख्याति प्राप्त है।

Scanned by CamScanner

Notes

8. वीर देवजी
(देवनारायण जी)

"विष्णु के अवतार माना जाता है।"

⇒ जन्म → भीलवाड़ा
⇒ देवरा प्रमुख → गोठां दड़ावत — भीलवाड़ा
⇒ अन्य देवरा — देवधाम — जोधपुरिया — निवाई (टोंक)
⇒ गुर्जरों के लोक देवता
⇒ माता — पिता — सवाईभोज व सोढ़ी
⇒ देवनारायण जी की फड़ पर डाक टिकट
⇒ जारी किया गया।
⇒ सबसे पुरानी, लम्बी, छोटी फड़

9. भुरिया बाबा / गोमतेश्वर बाबा

⇒ दक्षिणी राज० के गौडवान भाग में
⇒ मीणा जाति के ईष्ट देव माने जाते हैं।
⇒ मीणा जाति के लोग बाबा की झूठी कसम नहीं लेते।
⇒ इनका मंदिर सूकड़ी नदी पर बना है।
⇒ मंदिर — प्रतापगढ़ — पाली — सिरोही
⇒ शौर्य के प्रतीक माने जाते हैं।

10. ललकीनाथ जी

"वृक्षों के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए प्रसिद्ध"

⇒ वास्तविक नाम — गांगदेव राठौड़
⇒ शेरगढ़ (जोधपुर) ठिकाने के शासक
⇒ ललकीनाथ नाम गुरु ने दिया।
⇒ वृक्षों की कटाई नहीं करने देते।
⇒ इनका प्रमुख स्थल पंचमुखी पहाड़ी
⇒ जालौर में है।

11. रूपनाथ जी

⇒ पाबूजी की मौत का बदला लेने के लिए इन्होंने जींदराव खींची का वध किया।
⇒ पाबूजी के बड़े भाई बूढ़ोजी के पुत्र थे।
⇒ थान — कोलूमण्ड (जोधपुर), सिमुदड़ा (बीकानेर)

Scanned by CamScanner

Notes

12 केसरिया कुंवर जी	⇒ गोगा जी के पुत्र ⇒ इनका भोपा सर्प देश के के रोगी का जहर मुंह से चुसकर बाहर निकालते है। ⇒ थान पर सफेद ध्वजा फहराते हैं।
13. मामा देव जी "बरसात के लोक देवता"	⇒ प्रतिमा के रूप में एक काठ का तोरण होता है। ⇒ भैंस की कुर्बानी दी जाती है।
14. डूंगजी – जवाहर जी	⇒ दोनो भाई वे अपने एकत्रित धन को जरूरत मंदो को बांट कर उनकी सहायकता करते थे।
15. वीर बिग्गा जी "गायों के मुक्तिदाता"	⇒ जाति — जाट, जन्म — बीकानेर ⇒ जाखड क्षेत्र के कुल देवता ⇒ मुस्लिम लुटेरो से गाय छुराने मे प्राण गवाये
16. बाबा झुंझार जी	⇒ जन्म — नीमकाथाना — सीकर ⇒ जाति — राजपुत ⇒ प्रतिवर्ष रामनवमी को मेले का आयोजन

Scanned by CamScanner

⇒ राज० के लोक संत एवं सम्प्रदाय

Notes

PAGE NO. :
DATE : / /

1. दादू दयाल :- (राज० का कबीर)

- जन्म — 1544 — अहमदाबाद (गुजरात)
- कर्मस्थली — नरैना (सांभर) — प्रधान पीठ
- गुरु — वृद्धानन्द
- उपदेश ग्रंथ "दादू दयाल की वाणी" व "दादू दयाल रा दोहा"। भाषा — संधुकड़ी
- सत्संग स्थल को "अलख दरीबा" कहते हैं।
- 152 शिष्य थे — 52 प्रमुख थे — यह "बावन स्तम्भ" कहलाये।
- के प्रधान शिष्य — 1. सुन्दरदास — पीठ — गेटोलाव — दौसा
  2. रज्जब — सांगानेर — जयपुर — जीवन भर दुल्हे के वेश में रहे रज्जब।
- सम्प्रदाय पाँच भागों में बंटा →
  1. नागा 2. खालसा 3. उत्तरादेय 4. खाकी, विरक्त

2. जाम्भोजी / विश्नोई सम्प्रदाय पर्यावरण वैज्ञानिक / गुंगा — गहला / श्रीकृष्ण अवतार

- जन्म — पीपासर — नागौर — जाति — राजपूत — गौत्र — पंवार
- वास्तविक नाम — धनराज / जाम्भेश्वर, गुरु — गोरखनाथ
- समराथल (बीकानेर) में 1485 में 20+9=29 नियम चलाये।
- उपदेश स्थल को साथरी कहते हैं।
- "वृक्ष बचाओ आंदोलन" खेजड़ली इसी सम्प्रदाय ने चलाया।
- मुकाम (बीकानेर) — समाधि → प्रधान पीठ।
- रामड़ावास (जोधपुर) — उपदेश स्थल।
- "हिन्दु मुस्लिम एकता" के प्रतीक। पशु बली पर रोक लगाई।
- के उपदेश 120 वाणियों में सुरक्षित है। जिन्हें "जम्भ सागर" कहते हैं।
- इन्हें पढ़ने वाला शब्दी या गायणा कहलाता है।
- 151 शब्दों में — "जम्भ गीता" — विश्नोई सम्प्रदाय का 5वां वेद

Scanned by CamScanner

* {बाँगड़ की मीरा — गवरी बाई}

Notes

PAGE NO. :
DATE : / /

मीरा बाई :- (राजस्थान की राधा)

दासी सम्प्रदाय

→ वास्तविक नाम — पेमल , गुरु — रैदास

→ जन्म — कुड़की गाँव — पाली — लालन-पालन — मेड़ता (नागौर)

→ पिता — रतनसिंह राठौड़, माता → कुशल कंवर

→ का विवाह मेवाड़ के राणा सांगा के पुत्र भोजराज के साथ हुआ

↓

कुछ समय बाद मृत्यु।

- श्रीकृष्ण को उपास्य देव मानकर पूजा करने लगी।
- दासी सम्प्रदाय की स्थापना की।
- को मारने के लिए विक्रमादित्य ने जहर का प्याला भेजा, मीरा अमृत समझ के पी गई।

- धार्मिक मान्यता के अनुसार डाकोर (गुजरात में रणछोड़ जी के मंदिर में मीरा गिरधर में लीन हो गई
- इतिहास के अनुसार मीरा का देहान्त वृन्दावन में हुआ।
- मीरा बाई के नेतृत्व में 'रत्नाखाती' ने ब्रज भाषा में "नरसिंह जी रो मायरो" ग्रंथ लिखा

- तीन मीरा मंदिर
  1. कुम्भश्याम मंदिर — चित्तौड़
  2. —चारभुजा मंदिर मेड़ता — नागौर
  3. जगत शिरोमणी मंदिर — आमेर।

⇒ संत जसनाथ जी / जसनाथी सम्प्रदाय

→ जन्म — कतरियासर — बीकानेर.

→ जाति — जाट

→ 36 नियम — अपनाने वाले जसनाथी कहलाये।

→ उपदेश दिया — सीभूधड़ा व कोंडा ग्रंथ में संग्रहित

→ **आश्विन शुक्ल सप्तमी** को ज्ञान प्राप्ति।

→ संत — "सिद्ध" कहलाये।

→ सम्प्रदाय → "अग्नि नृत्य" करता है।

Note:-

{ऊंट महोत्सव — बीकानेर
मरु महोत्सव — जैसलमेर
थार मरुस्थल — बाड़मेर}

↑

"अग्नि नृत्य" का प्रदर्शन"

Scanned by CamScanner

Notes

PAGE NO. :
DATE : / /

5. संत पीपा जी

- जन्म — "गागरोन दुर्ग" — सालावाड़
- खींची-चौहान, गुरु-रामानंद, वास्तविक नाम — प्रतापसिंह
- "निर्गुण संत"
- "दर्जी समुदाय" का आराध्य देव।

Note :- "पीपा की गुफा — टोडा (टोंक)
पीपा का मंदिर — समदड़ी (बाड़मेर)
पीपा की छतरी — गागरोन (सालावाड़)"

6. संत धन्ना जी :-

- जन्म — धुवण — टोंक
- "निर्गुण संत", गुरु — रामानन्द
- बनारस गए — रामानन्द के शिष्य बनकर राज० आ गये।

↓

"भक्ति आंदोलन के जनक"

7. संत लाल दास जी :-

- जन्म — धोलीदेव — अलवर
- जाति — "मेव"
- उपदेश — "लाल दास री चेतावणियो" में सुरक्षित
- "प्रधान पीठ" — नगला जसाज — भरतपुर।

8. हम्मीउदीन चिश्ती

- दरगाह → नागौर
- को "संन्यासियो का सुल्तान"
- "तारकीन की दरगाह"
- "राज० का दूसरा ख्वाजा"

Scanned by CamScanner

Ram Saini
7568305710

9. Notes

⇒ संत रामचरण जी / रामस्नेही सम्प्रदाय (राम नाम जपना)

(जयपुर)

- → "संस्थापक" — रामकिशन / रामचरण जी — जन्म — सोडाग्राम
- → प्रार्थना स्थल → "रामद्वारा" — गुरु का चित्र रखा जाता है।
- → सम्प्रदाय में कहा गया है "कोई भी व्यक्ति गुरु के बिना भवसागर पार नहीं कर सकता है"
- → उपदेशों का संग्रह → "अणभैवाणी"
- → "प्रधान पीठ" — शाहपुरा (भीलवाड़ा)

अन्य पीठ

सिंहथल — बीकानेर, खैड़ापा — जोधपुर
रैवासा — सीकर, रैण — नागौर

10. वैष्णव सम्प्रदाय

(शाखाएँ)

- (अ) निम्बार्क सम्प्रदाय — सलेमाबाद (अजमेर)
- (ब) गौड़ीय सम्प्रदाय — (जयपुर) गोविन्द देव जी का मंदिर
- (स) वल्लभ सम्प्रदाय — (नाथद्वारा)
- (द) रामानंदी सम्प्रदाय — रैवासा (सिकर)
- (ए) रामानुज सम्प्रदाय — गलता जी (जयपुर)

"वैष्णव सम्प्रदाय"

- → की जानकारी प्रथम बार — "घोसुण्डी शिलालेख" (चित्तौड़गढ़)
- → चार भागों में बाँटा गया है।

1. विशिष्टाद्वैत मत — रामानुज
2. द्वैत मत — मध्वाचार्य
3. शुद्धाद्वैत मत — वल्लभाचार्य → पुष्टीमार्ग की स्थापना
4. द्वैताद्वैत मत — निम्बार्काचार्य

Scanned by CamScanner

{ Note :- संत रैदास जी — राजस्थान के नृसिंह जी। }

Notes

PAGE NO. :
DATE : / /

(अ) निम्बार्क / सनकादी सम्प्रदाय :-

→ प्रधान पीठ — किशनगढ़ के पास — सलेमाबाद।
→ दूसरी पीठ — उदयपुर
→ इस सम्प्रदाय में "राधा / कृष्ण का युगल" रूप की पूजा करते हैं।

(ब) गौड़िय सम्प्रदाय :-

→ संस्थापक → "गौरांग महाप्रभु — चैतन्य"
→ गोविन्द देव जी की मुर्ति वृन्दावन से आमेर राजा मानसिंह Ist लाया।
→ चन्द्र महल / सिटिपैलेस से मुर्ति स्पष्ट नजर आती हैं।
→ जयपुर के राजा स्वयं को गोविन्द देव जी का दीवान / पुजारी मानते हैं।

(स) वल्लभ सम्प्रदाय :-

→ प्रधान पीठ — नाथद्वारा (राजसमंद)
→ दूसरी पीठ — कोटा
→ भगवान "श्रीकृष्ण के बाल रूप" की पूजा की जाती हैं।
→ श्रीनाथ जी के मंदिर का निर्माण "राजसिंह" ने करवाया।
→ मंदिर का वास्तविक नाम "सप्त ध्वजों के स्वामी" है।
→ श्री नाथद्वारा की पिछवाईयां, हवेली संगीत, भित्तीचित्र प्रसिद्ध हैं।

(द) रामानंदी सम्प्रदाय :-

→ राज० में कृष्णदास जी "पयहारी" ने गलता जी (जयपुर) में पीठ स्थापित की।
→ प्रधान पीठ — रैवासा (सीकर)
→ इस सम्प्रदाय का आश्रय जयपुर राजा सवाई जयसिंह ने किया।
↓ ग्रंथ
"रामरासा"

(र) रामानुज सम्प्रदाय :-

→ संस्थापक → रामानुजाचार्य
→ प्रधान पीठ → "गलता जी" (जयपुर)

Scanned by CamScanner

Notes

PAGE NO.:
DATE: / /

11. शैव सम्प्रदाय :- (लकुलीश सम्प्रदाय)

- भगवान शिव की उपासना करने वाले "शैव" कहलाये।
- जानकारी → "कालीबंगा / सिंधु घाटी सभ्यता" से
- उदयपुर राज घराने ने शैव सम्प्रदाय को आश्रय दिया।
- एकलिंग के मंदिर का निर्माण — उदयपुर राजा बप्पा रावल।
- चार भाग
  1. कापालिक
  2. पाशुपात
  3. वीरशैव
  4. कालामुखी

12. नाथ सम्प्रदाय

- प्रधान पीठ → जोधपुर
- दूसरी पीठ → पुष्कर
- के पूज्यनीय संत → मच्छेंदर नाथ / गोरख नाथ
- मंदिर का निर्माण → मानसिंह राठौड़ ने करवाया।

13. परनामी सम्प्रदाय :-

- प्रधान पीठ — मध्यप्रदेश
- राज० में एकमात्र पीठ — आदर्शनगर (जयपुर)

14. सिक्ख सम्प्रदाय :-

- प्रवर्तक — प्रथम गुरु नानक देव, जन्म — लाहौर तलवंडी (ननकाना)
- अवतार को नहीं मानते।
- पवित्र पुस्तक → "गुरु ग्रंथ साहिब"
- 10 गुरु — अंतिम गुरु → गुरु गोविन्द जी।
- सैनिक संगठन — "खालसा"
- पंच ककार — केश, कंघा, कृपाण, कच्छा, कड़ा

Scanned by CamScanner

Notes

15. ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती

→ जन्म — संजरी — फारस

→ मौहम्मद गौरी के साथ भारत आये।
सम्राट पृथ्वीराज चौहान के काल में।

→ सम्प्रदाय में
गुरु — पीर
शिष्य — मुरीद
उत्तराधिकारी — वली

→ जहाँ रहते हैं। उसे "खानकाह" कहा जाता है।

— खानकाह — अजमेर में बनाया।
- मृत्यु के बाद दरगाह इल्तुतमिश ने बनाई।

Note :- संसार का दूसरा मक्का मदीना — अजमेर

दो देग (कड़ाईया) बड़ी का निर्माता — अकबर
छोटी का निर्माता → जहाँगीर

दरगाह में जामा मस्जिद का निर्माता — शाहजहाँ

उर्स/मेला — 1 रज्जब से 6, 9 रज्जब तक।
उर्स का उद्घाटन — भीलवाड़ा निवासी — गौरी परिवार

Note ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती सम्प्रदाय सद्भावना के प्रतीक माने जाते हैं।

16. नरहड़ के पीर — बांगड़ के धनी
→ जन्माष्टमी पर मेला लगता है।
→ चिड़ावा (झुंझुनू)

Scanned by CamScanner

Notes

PAGE NO.:
DATE: / /

⇒ रणकपुर-पाली — जैन व्यापारी — धरणशाह / धना सेठ

माधाई नदी के मुहाने

वास्तुकार — देपाक की देखरेख

भगवान ~~ऋषभदेव~~ / आदिनाथ — 1440 खम्भों का जैनमंदिर का निर्माण करवाया

↓

स्तम्भों का वन

राजस्थान के प्रमुख त्यौहार

Notes

चैत्र	→	अप्रैल	→ Apiral
वैसाख	→	मई	→ May
जेठ	→	जुन	→ Jun
आषाढ़	→	जुलाई	→ July
श्रावण	→	अगस्त	→ Augest
भाद्रपद	→	सितम्बर	→ September
आश्विन	→	अक्टुम्बर	→ Octumber
कार्तिक	→	नवम्बर	→ November
मार्गशीर्ष	→	दिसम्बर	→ December
पौष	→	जनवरी	→ January
माघ	→	फरवरी	→ Febuary
फाल्गुन	→	मार्च	→ March.

Note :- हिन्दुओं का पहला महिना "चैत्र (अप्रैल)" व अंतिम महिना फाल्गुन (मार्च) होता है।

कृष्ण पक्ष / बुंदी / कालीरात — 1 से 15 दिन — अमावस्या
शुक्ल पक्ष / सुदी / उजालीरात — 16 से 30 दिन — पुर्णिमा

ध्यान रखने योग्य महत्वपूर्ण बिन्दू :-

- राजस्थान में त्यौहारों की नगरी "जयपुर" को कहते हैं।
- राज० का सबसे प्रसिद्ध त्यौहार 'होली' है।
- राज० के होली व गणगौर का त्यौहार मिश्र के त्यौहार के समान है।

Scanned by CamScanner

Notes

PAGE NO. :
DATE : / /

त्यौहार	मास

चैत्र :-

धुलंडी → चैत्र कृष्णा I
(*) शीतला अष्टमी → चैत्र कृष्णा अष्टमी
नववर्ष (हिन्दु) → चैत्र शुक्ल I
(*) गणगौर → चैत्र शुक्ला तृतीय
(*) रामनवमी → चैत्र शुक्ला 9

वैशाख

(*) आखा तीज / अक्षय तृतीया → वैशाख शुक्ला तृतीया
पीपल पूर्णिमा → वैशाख पुर्णिमा

आषाढ़

गुरु पूर्णिमा → आषाढ़ पूर्णिमा
~~नाग पंचमी~~ →

श्रावण

नाग पंचमी → श्रावण कृष्णा 5
(*) रक्षाबंधन → श्रावण पूर्णिमा
(*) हरियाली अमावस → श्रावण अमावस्या
(*) श्रावणी तीज / छोटी तीज (जयपुर) → श्रावण शुक्ला 3

भाद्रपद

जलझुलनी → भाद्रपद शुक्ला 11
(*) ⇒ बड़ी तीज / सातुड़ी तीज → भाद्र कृष्णा 3
कजली / बूढ़ी तीज (बूंदी)
(*) कृष्ण जन्माष्टमी → भाद्रपद कृष्णा 8
गोगा नवमी → भाद्रपद कृष्णा 9
(*) शीव-चतुर्थी → भाद्रपद शुक्ला 4
(*) गणेश-चतुर्थी (सवाई माधोपुर) → भाद्रपद शुक्ला 4

अश्विन

दुर्गाष्टमी → अश्विन शुक्ला 8
* दशहरा (आगरा) → अश्विन शुक्ला 10
शरद पूर्णिमा → अश्विन पूर्णिमा

Scanned by CamScanner

Notes

कार्तिक :-

- (*) करवा – चौथ ⟶ कार्तिक कृष्णा 4
- धनतेरस ⟶ कार्तिक कृष्णा 13
- (*) दीपावली ⟶ कार्तिक अमावस्या
- गोवर्धन पूजा ⟶ कार्तिक शुक्ल 1
- भैया दूज ⟶ कार्तिक शुक्ला 2
- (*) देव उठनी ग्यारस ⟶ कार्तिक शुक्ला 11

माघ

- (*) बसंत पंचमी ⟶ माघ शुक्ला 5
- (*) माघ पूर्णिमा ⟶ माघ पूर्णिमा

फाल्गुन

- (*) शिवरात्रि ⟶ फाल्गुन कृष्णा 13
- (*) होली ⟶ फाल्गुन पूर्णिमा

होलियाँ ⇒

1. पत्थर मार होली ⟶ बाड़मेर
2. लट्ठमार होली ⟶ महावीर जी, करौली
3. कोड़ामार होली ⟶ भिनाय, अजमेर
4. देवर – भाभी होली ⟶ ब्यावर, अजमेर
5. बादशाह होली ⟶ नाथद्वारा, राजसमंद
6. डैंगची, जेलची, बाल्टीमार होली ⟶ बीकानेर
7. अंगारों की होली ⟶ लालसोट, दौसा – केकड़ी
8. गोबर के कण्डों की होली ⟶ गलियाकोट, डूंगरपुर

" तीज त्योंहारो बावड़ी, ले डूबी गणगौर" – आशय

त्योंहारो का आगमन तीज से, समाप्ति → गणगौर को।

Notes

छोटी तीज प्रसिद्ध — जयपुर

बड़ी तीज / कजली तीज / सातुड़ी तीज / बुड़ी तीज — बूंदी

सबसे प्रसिद्ध त्यौहार गणगौर — जयपुर

बिना ईसर की गणगौर — जैसलमेर

थींगा गणगौर → उदयपुर / जोधपुर

Scanned by CamScanner

⇒ राजस्थान के प्रमुख मेले

Notes

ऋषभदेव / आदिनाथ / कालाजी /
केशरिया नाथ जी मेला →
- ↳ धूलेव गाँव – उदयपुर
- ↳ चैत्र कृष्णा अष्टमी
- → जैन व भील पूजा करते हैं
- की मूर्ति केसर भील नहीं नहाते केसर का पानी जो मूर्ति पर चढ़ा होता है उस को पीकर

मेला – चैत्र माह :-

1. शीतला माता मेला :-
   - शील की डूंगरी – चाकसू, जयपुर
   - चैत्र कृष्ण अष्टमी को।
   - गधे की सवारी

2. कैला देवी मेला :-
   - करौली
   - चैत्र शुक्ल सप्तमी और अष्टमी को।

3. गणगौर मेला
   - जयपुर, उदयपुर।
   - चैत्र शुक्ल तीज।

4. मेहंदीपुर बालाजी मेला :-
   - दौसा
   - चैत्र पूर्णिमा हनुमान जयंती

वैशाख मेले

5. नारायणी माता मेला :-
   - सरिस्का (अलवर)
   - वैशाख शुक्ला एकादशी

6. मातृ कुण्डिया मेला :-
   - हरनाथपुरा (चित्तौड़गढ़)
   - वैशाख पूर्णिमा।

Scanned by CamScanner

गौतमेश्वर (भूरिया बाबा) मेला :-
- नाना स्टेशन, (पाली)
- 13 अप्रैल - 15 मई।

ज्येष्ठ

सीता माता मेला :-
- सीतामाता (प्रतापगढ़)
- ज्येष्ठ अमावस्या

Ramsaini
7568305710

सीता बाड़ी का मेला :-
- सीताबाड़ी (बाँरा)
- ज्येष्ठ अमावस्या
- **"सहरिया जनजाति का कुंभ"**
- इसी मेले में अपना जीवन साथी चुनते हैं।

श्रावण

कल्पवृक्ष मेला :-
- अजमेर, मांगलियावास
- हरियाली अमावस्या।

भाद्रपद

रामदेव जी मेला :-
- रूणेचा — पोकरण — जैसलमेर
- भाद्रपद शुक्ला द्वितीया

रानी सती का मेला :-
- झुंझुनू
- भाद्रपद अमावस्या

Scanned by CamScanner

Notes

गोगा नवमी मेला
- गोगामेड़ी (हनुमानगढ़)
- भाद्रपद कृष्णा नवमी

गणेश जी मेला :-
- रणथम्भौर, सवाईमाधोपुर
- भाद्रपद शुक्ला चतुर्थी

भर्तृहरी मेला :-
- भर्तृहरि, अलवर
- भाद्रपद शुक्ला अष्टमी

खेजड़ली शहीद मेला :-
- खेजड़ली (जोधपुर)
- भाद्रपद शुक्ला दशमी

तेजा जी मेला :-
- परबतसर, (नागौर)
- भाद्रपद शुक्ला दशमी।

आश्विन

दशहरा मेला
- कोटा
- अश्विन शुक्ला दशमी
- "राजस्थान का प्रसिद्ध दशहरा मेला"

मीरा महोत्सव
- चित्तौड़गढ़
- आश्विन पूर्णिमा (शरदपूर्णिमा)

Scanned by CamScanner

कपिल मुनि मेला :-
└ कोलायत झील के किनारे बिकानेर
└ कार्तिक मास पूर्णिमा
└ सांख्य दर्शन के प्रतिपादक थे
↓
(चलाने वाले)

कार्तिक

पुष्कर मेला :-
→ पुष्कर, अजमेर
- कार्तिक मास की पूर्णिमा
- "राज० की सबसे पवित्र व प्रदुषित झील"
- कनाडा की सहायकता से सफाई की जा रही है।
- राज० का सबसे रंगीन मेला। विदेशी आते हैं।
- पुष्कर के किनारे **52** घाट बने हुये हैं।
- एक घाट का निर्माण **मैडम क्योरी** ने करवाया है जिसे **जनाना घाट / गांधी घाट** कहते हैं।

मार्गशीर्ष

मानगढ़ धाम मेला :-
→ सिणधरी (बाड़मेर)
→ मार्गशीर्ष कृष्णा तृतीय
→ "आदिवासियों का मेला"

माघ

श्री चौथ माता मेला :-
→ चौथ का बरवाड़ा (सवाई माधोपुर)
→ माघ कृष्णा चतुर्थी

(*) बेणेश्वर मेला
→ नेवटापुरा, साबला, ~~डूंगरपुर~~ डूंगरपुर
→ माघ पूर्णिमा
→ जो सोम + जाखम + माही → त्रिवेणी किनारे।
→ भीलो का कुंभ / वांगड़ का कुंभ / आदिवासियों का कुंभ
- एकमात्र स्थल जहां खण्डित शीवजी की पुजा होती है।
- बेणेश्वर धाम के पास मावजी महाराज का मंदिर बना हुआ है। जिन्होंने **लासोड़िया आंदोलन** चलाया।

Scanned by CamScanner

Notes

PAGE NO. :
DATE : / /

फाल्गुण

शिवरात्री मेला
- ↳ शिवाड़ (सवाई माधोपुर)
- ↳ फाल्गुन कृष्णा तृतीय

* छींछदेवी — बांसवाड़ा
* बैनेश्वर — डूंगरपुर
* मंचकुण्ड — धौलपुर

↑ [तीनों में ब्रह्मा जी की मूर्तियां लगी है]

सौरत (त्रिवेणी) मेला
- ↳ मेनाल (भीलवाड़ा)
- ↳ फालगुन कृष्णा 13

खाटूश्याम जी मेला :—
- ↳ खाटूश्याम जी (सिकर)
- ↳ फाल्गुन शुक्ला 11–12

मेले जो वर्ष में एक बार से ज्यादा भरते हैं।—

वीरातारा का मेला →	बाड़मेर →	चैत्र, भाद्रपद शुक्ला-पु
करणी माता का मेला →	देशनोक, बीकानेर →	नवरात्रा (चैत्र, आश्विन)
नागणेच्ची का मेला →	बीकानेर →	नवरात्रा
महोदरी का मेला →	मोदरा (जालोर) →	नवरात्रा
जीन माता का मेला →	रैवासा ग्राम (सीकर) →	नवरात्रा (चैत्र व ")
शाकम्भरी माता का मेला →	शाकम्भरी (सांभर →	नवरात्रा "
दधिमती माता का मेला →	मंगलोद (नागौर) →	शुक्ला 8 (")
मनसा माता का मेला →	झुंझुनू →	चैत्र बदी 8 / आश्विन शुक्ला 8
इंद्रगढ़ / बीजासन माता मेला →	इन्द्रगढ़ (बूंदी →	चैत्र / आश्विन नवरात्रा / वैशाख पूर्णिमा /

डिग्गी कल्याण जी मेला
- ↳ डिग्गी मालपुरा (टोंक)
- ↳ अगस्त (श्रावण माह)

"मंचकुण्ड" → तीर्थों का भांजा

"पुष्कर" → तीर्थराज / तीर्थों का मामा

Scanned by CamScanner

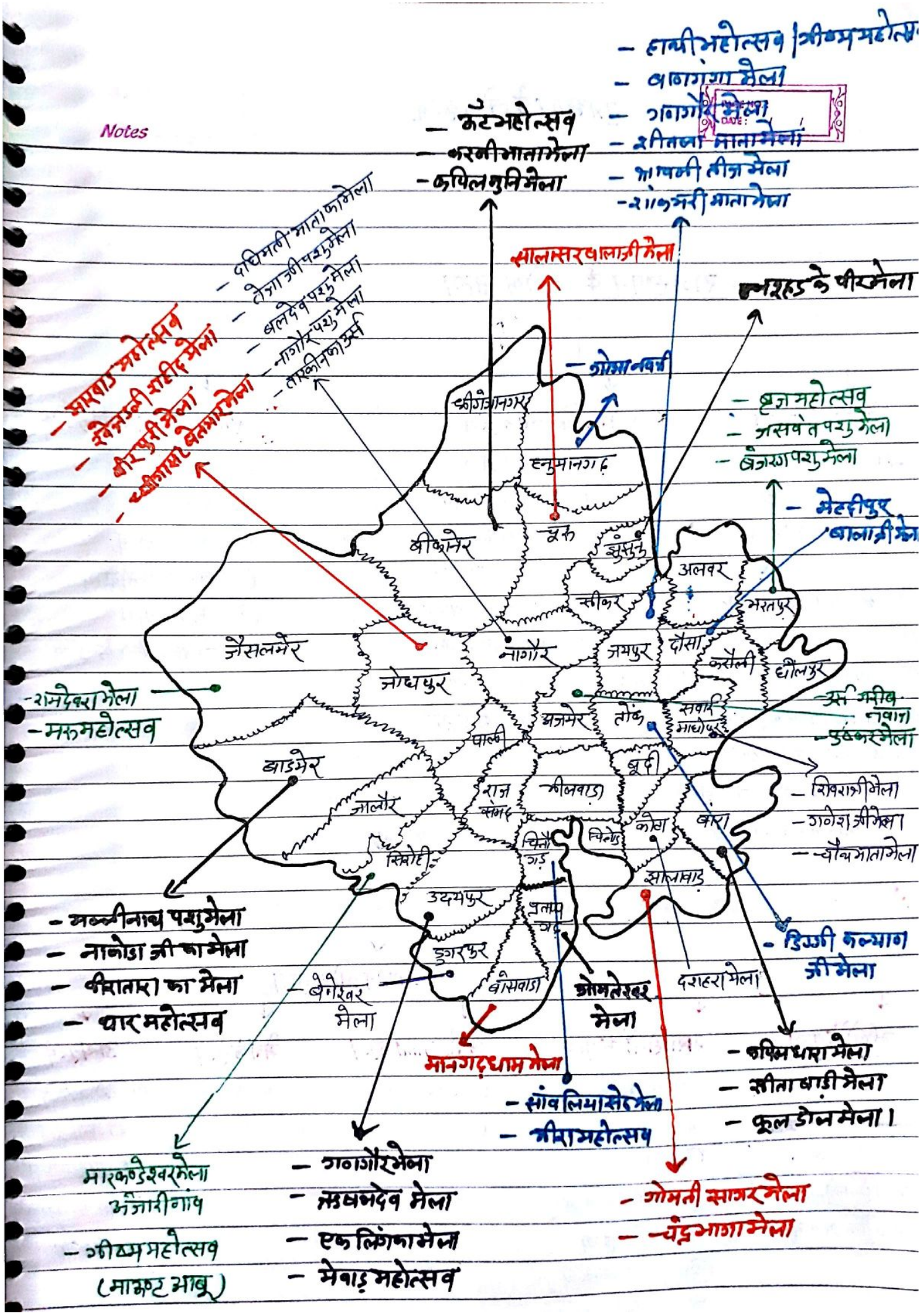

Notes

Scanned by CamScanner

Notes

राजस्थान के लोक नृत्य

PAGE NO. :
DATE : / /

राजस्थान के लोक नृत्य

क्षैत्रिय लोकनृत्य

1. शेखावटी
   गींदड़, चंग, दप
   कच्छी घोडी नृत्य
2. जालौर का ढोल नृत्य
3. मारवाड़ का डांडिया, मछली नृत्य
4. जसनाथियों का अग्नि नृत्य (बीकानेर)
5. अलवर, भरतपुर का बम नृत्य
6. झालावाड़ का बिंदौरी नृत्य
7. नाथद्वारा का डांग नृत्य
8. भीलवाड़ा का नाहर नृत्य

व्यवसायिक लोक नृत्य

(i) भवाई नृत्य
(2) तेरहताली नृत्य
(3) कालबेलियों नृत्य
   – इंडोणी, पणिहारी
   शंकरिया, बागड़िया
(4) कंजर जाति का
   – चकरी व धाकड़ नृत्य
(v) कच्छी घोडी नृत्य

सामाजिक एवं धार्मिक लोक नृत्य

1. गरबा नृत्य
2. घूमर नृत्य
3. वीर तेजाजी नृत्य
4. घुड़ला नृत्य
5. गोगा भक्तों के नृत्य

जातिय लोक नृत्य

भीलों के नृत्य

1. गैर नृत्य
2. गवरी व राई नृत्य
   युद्ध नृत्य
   द्विचकी नृत्य
   लोक नृत्य घूमर।

गरासियों के नृत्य

1. वालर नृत्य
2. कूद नृत्य
3. कूद नृत्य
4. मांदल नृत्य
5. गौर नृत्य
6. जवारा नृत्य
7. मोरिया नृत्य

कथौड़ी जाति के नृत्य

1. मावलियों नृत्य
2. होली नृत्य

मेवो के नृत्य

1. रणबाजा नृत्य
2. रतवई नृत्य

अन्य नृत्य

1. भील मीणों को नेजा नृत्य
2. बालदिया नृत्य
3. गुजरों का चरी नृत्य
4. सहरियों का शिकारी नृत्य

Scanned by CamScanner

PAGE NO. :
DATE : / /

Notes A. क्षेत्र क्षेत्रीय लोक नृत्य :-

Ⓐ शेखावाटी क्षेत्र

① चंग नृत्य / डफ नृत्य :-

- गांव के चौक / गुवाड़
- केवल पुरुष
- फाल्गुन मास की पूर्णिमा को होली
- अलगोजा, मंजिरे की बजाया जाता है
- गीत फाग / धमाल

② गीदड़ नृत्य :-

- गाँव / चौक
- होली पर - केवल पुरुष
- वाद्य यंत्र - नगाड़ा

3. कच्छी घोड़ी नृत्य

- केवल पुरुष
- लोक व्यावसायिक नृत्य
- पैटर्न बनाने की कला पाई जाती है।

⇒ मारवाड़ के नृत्य

घुड़ला नृत्य :-

- चैत्र कृष्ण अष्टमी
- केवल लड़कियां
- सिर पर मटका रख कर
- नृत्य को संरक्षण "रूपायन संस्थान बोरूंदा (जोधपुर) ने दिया

2. डांडिया नृत्य :-

- मूलतः - गुजरात
- राज० में प्रसिद्ध जोधपुर
- नवरात्रों में
- युगल नृत्य

3. मघली नृत्य :-

- बंजारों की कुंवारी लड़कियाँ
- चैत्र की पूर्णिमा
- हर्षोल्लास व धार्मिक नाट्य का रूप

* हर्षोल्लास से प्रारम्भ / दुःख के साथ समापन

Scanned by CamScanner

3) जालोर के नृत्य :-

ढोल नृत्य :-

- उद्गम - जालोर
- मांगलिक अवसरों पर
- सहायक वाद्य यंत्र - थाली
- "थाकना शैली" में

4. बीकानेर नृत्य :-

(1) अग्नि नृत्य :-

- कतियासर - गाँव - बीकानेर
- "जसनाथी सम्प्रदाय" के द्वारा
- अग्नि के अंगारो पर - धुणा
- नंगे पांव, नृत्याकार - सिद्ध
- नारा - "फतेह - फतेह"

5. भरतपुर / अलवर बम नृत्य :-

बम नृत्य :-

- भरतपुर / अलवर
- फाल्गुन की मस्ती
- नई फसल आने की खुशीमें।
- वाद्य यंत्र - बम
- गीत - रसिया (बमरसिया)

6. भीलवाड़ा के नृत्य

नाहर नृत्य :-

- माण्डल गाँव - भीलवाड़ा
- शरीर पर रुई लपेट कर
- शेर बनना।
- यंत्र - ढोल
- उद्भव → शाहजहाँ के शासन काल से।

2. व्यावसायिक नृत्य :-

1. भवाई नृत्य :-

- उदयपुर संभाग
- भवाई जाति
- सिरपर मटका रखकर जमीनसे रुमाल उठाना / तलवार की धार पर चलना / कांच के टुकड़ो पर चलना (7-8)

वर्तमान नृत्यांगना → अस्मिता काला, कजली, कुसुम, द्रौपदी

2. तेरह ताली नृत्य :-

- उद्गम - पादरला गाँव - पाली
- "कामड जाति" की महिलाएं
- वर्तमान की नृत्यांगना → मांगी बाई
- रामदेव जी मेले का आकर्षण / मुख्य नृत्य

3. कालबेलिया नृत्य :-

- जोधपुर / पाली / सिरोही / अजमेर / कोटा + ...
- वाद्य यंत्र → बीन एवं डफ

विशेष → आँखों की पुतलियों के अंगुठी उठाना / मुँह से नोट उठाना।

- चार प्रकार :-

इंडोणी → महिला / पुरुष गीत पर आधारित नृत्य।
पणिहारी → अधिक आकर्षण प्रेम आधारित नृत्य
बागड़ीया → "भीख माँगते समय।
शंकरिया → प्रेम आधारित

वर्तमान नृत्यांगना → कैचन, गुलाबो, सपेरा / कमली / राजकी।

Scanned by CamScanner

:- चकरी / धाकड़ नृत्य
- उद्गम् – हाड़ौती – कोटा
- आदिवासी – कंजर
- तेज रफ्तार से चक्कर – चकरी नृत्य
- धाकड़ नृत्य → झालापाव व बीरा के बीच में झालापाव की जीत की खुशी में
- " शौर्य से परिपूर्ण नृत्य "

3. सामाजिक एवं धार्मिक नृत्य

1. घूमर :- नृत्यों का सिरमौर / हृदय / आत्मा
- "राज का प्रमुख / प्रसिद्ध नृत्य
- केवल महिलाओं द्वारा।
- "गणगौर" – चैत्र शुक्ला तृतीया

2. गरबा नृत्य :-
- मुख्यत → गुजरात
- राज० में बांसवाड़ा / डूंगरपुर में
- नवरात्रा पर

3. घुड़ला नृत्य :-
- चैत्र कृष्णा 8
- स्त्रियों एवं बालिकाओं द्वारा किया जाता है।
- छेद वाले मटके में दीपक जला कर।

4. गोगा भक्तों के नृत्य :-
- गोगा नवमी पर
- चमार जाति।
- पीठ पर सांकल मारकर जख्मी होते हुए

Scanned by CamScanner

Notes

PAGE NO :
DATE : / /

⇒ जातिय लोक नृत्य

भील के नृत्य :- **गैर नृत्य :-**

- केवल पुरुषों द्वारा किया जाता है।
- वाद्य यंत्र — ढ़ोल
- होली के पावन पर्व पर

हाथीमना नृत्य :-

- केवल पुरूषों/महिलाओं द्वारा किया जाता है।
- मांगलिक अवसरों पर / विवाह अवसरों पर

नेजा / खेल नृत्य

- भील मीणाओं द्वारा किया जाता है।
- होली के दूसरे दिन
- गांव / चौक पर

⇒ गरासियों के नृत्य

कूदनृत्य / वालर नृत्य :- — धीमी गती में
- वाद्य यंत्र नही होता है।

↳ अर्द्ध वृत बनाते है वह तालियों से ही नृत्य

गुजरों का चरी नृत्य :-

- महिलाओं द्वारा किये जाने वाला नृत्य — N.H. 8 किशनगढ़
- गणगौर पर मुख्यत
- नृत्यागंना → फलकूबाई
- "गुजरों का प्रसिद्ध नृत्य"

राज का शास्त्रीय नृत्य :- "कत्थक"

- "आदिम घराना" जयपुर
- के प्रवर्तक — भानू जी महाराज
- वर्तमान कलाकार — बीरजू महाराज

Scanned by CamScanner

राजस्थान के लोक नाट्य

Notes

PAGE NO. :
DATE : / /

1. ख्याल :-

(अ) शेखावटी व चिड़ावा के ख्याल :-

- सीकर, खण्डेला, चिड़ावा, झारखंड
- कलाकार — "स्व नानूलालराणा / दुलियाराणा"
- रचनायें — हरीशचन्द्र / जयदेव कलाली / हीर रांझा / भर्तरी

(ब) कुचामनी ख्याल :-

- कुचामन (नागौर)
- कुचामन ख्याल के लिए 'लक्ष्मीराम' प्रसिद्ध हैं।
- रचना — गोगा चुहान / मीरा मंगल / राव रिणमल

(स) हेला ख्याल :-

- करौली – भरतपुर – सवाईमाधोपुर – अलवर – लालसोट
- मुख्यविशेषता – 'हेला देना' (लम्बी टेर में आवाज लगाना)

2. तुर्रा – कलंगी :-

तुर्रा → शिव, कलंगी → पार्वती

- हिन्दू संत तुकनगीर — तुर्रा
- मुस्लिम संत शाह अली — कलंगी

] — दरबार — चन्देरी राजा

- चित्तौड़गढ़
- शिव / पार्वती से जुड़ी हुई कथाओं को मंच पर दिखा "तुर्रा कलंगी" कहलाता हैं।
- शैली — मान्च, वाद्य-यंत्र — चंग

3. रम्मत

- बीकानेर – जैसलमेर
- परिभाषा :- होली व सावन पर होनेवाली काव्य प्रतियोगिताओं को रम्मत के नाम से जाना जाता हैं। तथा इसे खेलने वाला "खेलार" कहलाता हैं।
- "स्वतंत्र बावनी" रम्मत जैसलमेर में प्रसिद्ध हैं।
  ↑ तेजकवि।

Scanned by CamScanner

Notes

PAGE NO. :
DATE : / /

४. तमाशा

- जयपुर का परम्परागत लोक नाट्य शैली। — प्रसिद्ध
- 1594 में आमेर के महाराजा मानसिंह प्रथम के समक्ष मोहन कवि विरचित "धमका मंजरी" का आमेर में प्रदर्शन किया।
- सवाई प्रतापसिंह के काल में प्रसिद्ध हुआ — कलाकार — बंशीधर भट्ट
- यह खुले मंच पर होता है जिसे "अखाड़ा" कहते हैं।
- तमाशा — चैत्र अमावस्या — "गोपिचन्द"
  शीतलाष्टमी — जुट्टन मियाँ — के ख्याल प्रसिद्ध

5. नौटंकी :-

- भरतपुर संभाग
- राजा महाराजाओं से जुड़ी हुई गाथाओं को मंच पर दिखाना।
- नौटंकी के लिए भरतपुर के **सज्जन सिंह / गिरिराज प्रसाद (कामां वाले)** प्रसिद्ध है।
- राजा भर्तहरि / राजा हरिश्चंद्र / पृथ्वीराज राठौड़ / अमरसिंह राठौड़ की गाथाएं
  ↓
  गुरु — गोरखनाथ, रानी — पींगला — कोतवाला — नृत्यांगना

गवरी / राई :-

- उदयपुर / डूँगरपुर / बाँसवाड़ा
- शिव / पार्वती, भस्मासुर, मोहिनी की गाथाओं को मंच पर दिखाना
- राखी के दूसरे दिन से 40 दिन चलता है।
- "राज. का सबसे प्राचीन नाट्य / लोक नाट्यों का मेरुनाट्य"

स्वांग नाट्य :-

- भीलवाड़ा ~~जिले~~ जिले के मांडल में नारो का स्वांग प्रसिद्ध है।
- भाण्ड जाति के लोगों का परम्परागत नाट्य
- धार्मिक व पौराणिक गाथाओं पर आधारित नाट्य
- भाण्ड को बहरूपिया भी कहते हैं।
- इस नाट्य कला के लिए भीलवाड़ा निवासी "जानकी लाल भाण्ड" प्रसिद्ध हैं।

Scanned by CamScanner

Notes

PAGE NO. :
DATE : / /

9. **भवाई नाट्य :-**

- मुलत :- गुजरात
- राज० में गुजरात के सीमावर्ती जिलों में प्रसिद्ध
- "नाट्य में कलाकार अपना परिचय मंच पर कभी नही देते"

10. **चारबैत नाट्य :-**

- टोंक
- सेरो / शायरियों से खेले जाने वाला लोक नाट्य
- वाद्य यंत्र — डफ

11. **रासलीला**

- "फुलेरा नाट्य केन्द्र"
- श्रीकृष्ण के चरित्र पर आधारित

12. **राम लीला / कट्पुतली नाट्य :-**

राम लीला → "भगवान राम की जीवन लीलाओं पर आधारित"

→ "भगवान कृष्ण की लीलाओं पर आधारित"

→ (भरतपुर)

Ram Saini
7568305710

Scanned by CamScanner

राजस्थान के प्रमुख वाद्य यंत्र

Notes

PAGE NO. :
DATE : / /

वाद्य यंत्र

1. तत् वाद्य (तार से बने वाद्य यंत्र)	2 सुषिर यंत्र (फूंक से बजने वाले)	3. अवनद्ध / ताल वाद्य (चमड़े से बने यंत्र)	4. घन यंत्र (धातु से बने यंत्र)
1. सारंगी	– बाँसुरी	– ढोलक	– मंजीरा
2. इकतारा	– अलगोजा	– ढोल	– थाली
3. रावण हत्था	– शहनाई	– मृदंग / पखावज	– झांझ
4. जन्तर	– पूंगी (बीन)	– नगाड़ा	– करताल
5. कामायचा	– मशक	– नौबत	– घण्टा
6. भपंग	– बाँकिया	– चंग	– चिमटा
7. तन्दूरा / वेणों / चौतारा	– भुंगल (रणभेरी)	– डैरू	– भरनी
8. रबाज	– सतारा	– डमरू / डुग-डुगी	– झालर
9. रबाब	– नड़	– खंजरी	– घड़ा
10 चिकारा	– मोरचंग	– धौंसा	– घुंघरू
11 गूजरी	– करणा	– तासा	– गरासियों का लेजिम
12. सुरिन्दा	– तुरही	– तमाशा / टामक	– घुरालियो
13 दुकाको	– नागफनी	– घेरा	– रमझोल
14 सुरमण्डल	– मुरली	– टफ / ड़फ	– खड़ताल
15 दो तारा	– सींगा / सींगी	– ढ़ाल	– श्रीमंडल
16. रवम्मच	– सुरनाई	– कुंडी	– टिकोरी
17 अपंग	– शंख	– कमर	
	– तोटों / बरगू	– माट	

Notes

PAGE NO. :
DATE : / /

ध्यान रखने योग्य मुख्य बिंदु :-

- मांगलिक अवसरो पर "शहनाई" बजाई जाती है।
- आरती में "शंख" बजाया जाता है।
- युद्ध भूमि में "नौबत" बजाई जाती है।
- ख्वाजा मुइनउद्दीन चिश्ती की दरगाह की उर्स पर व मुहर्रम पर "ताशा" बजाया जाता है।

Scanned by CamScanner

राजस्थान की प्रमुख बोलियां

Notes

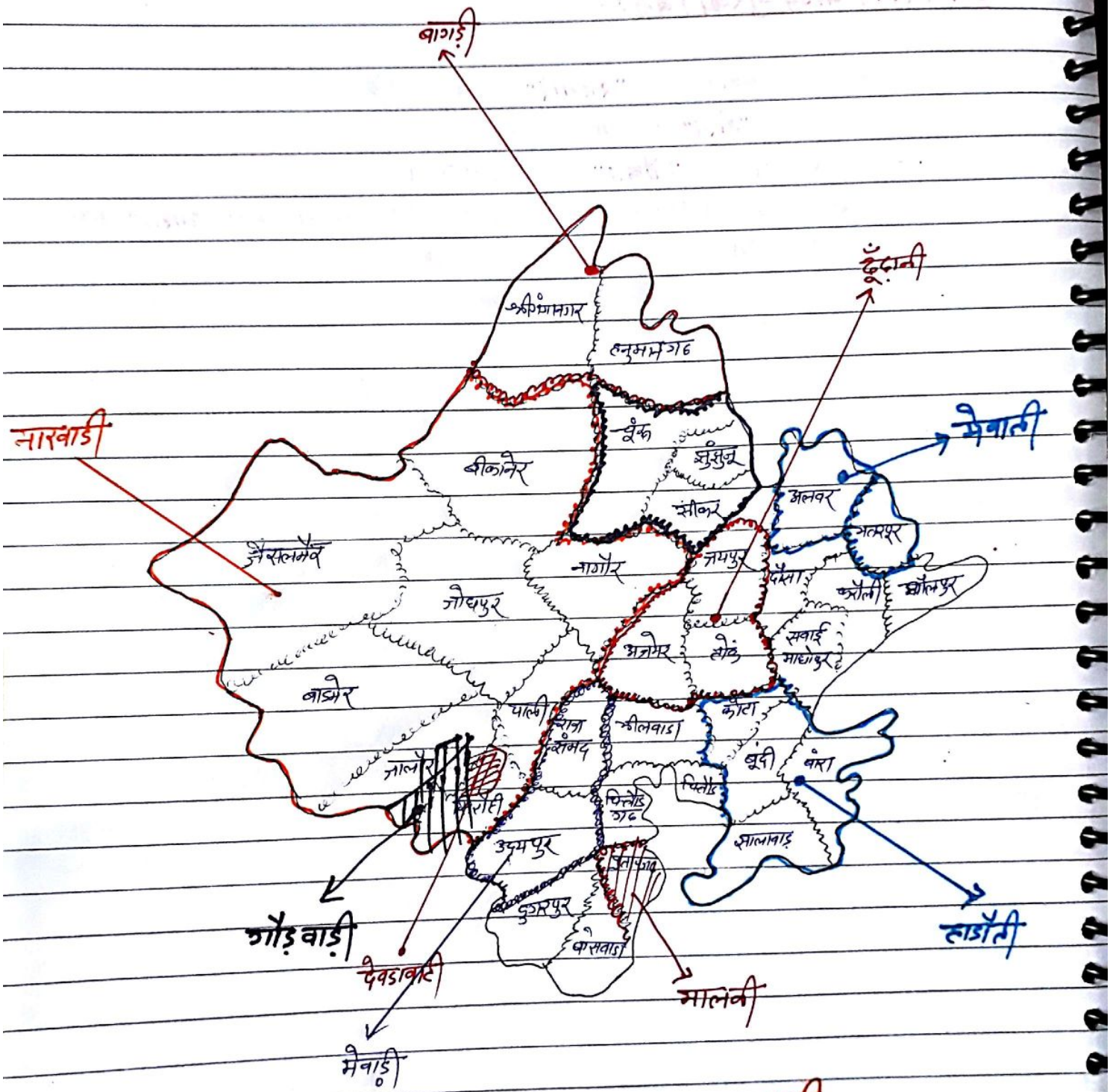

- मारवाड़ी
- ढूँढाड़ी (संत दादू की रचनाएं इसी बोली में)
- हाड़ौती (ढूंढाड़ी की उप बोली)
- देवड़ावाटी
- मेवाड़ी (मारवाड़ी की उपबोली)

Scanned by CamScanner

Notes

PAGE NO. :
DATE : / /

1 मारवाड़ी (मरू भाषा) → जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, पाली
नागौर, सिरोही के कुछ भाग
— मारवाड़ी के साहित्य रूप को "डिंगल" कहते हैं।

2. ढूँढाड़ी → जयपुर, किशनगढ़, शेखावाटी, लावा
अजमेर
"दादू संत की रचनाएं इसी बोली में है।"

3. मेवाड़ी
(मारवाड़ी की उपबोली) → उदयपुर, ~~चित्तौड़गढ़~~ / राजसमंद के आस पास

4. हाड़ौती
(ढूढ़ाड़ी की उपबोली) → कोटा, बूंदी, बाँरा, झालावाड़

5. मेवाती → अलवर, भरतपुर

6. अहीरवाटी → राठ क्षेत्र — अलवर / मुंडावर तहसील
जयपुर — कोटपुतली

7. मालवी → प्रतापगढ़ व झालावाड़ का दक्षिणी क्षेत्र

8. खैराड़ी → शाहपुरा, बूंदी के हिस्से

9. गौड़वाड़ी → जालौर / सिरोही के कुछ भाग

10. शेखावाटी → चूरू सीकर, झुंझुनूं

11. देवड़ावाटी — सिरोही जिले के कुछ भाग

Scanned by CamScanner

राजस्थान की प्रमुख जन जातियाँ

Notes

PAGE NO. :
DATE : / /

⇒ जनगणना 2001 व 2011 के अनुसार (लाखों में)

विवरण	अनुसूचित जाति (SC)		अनुसूचित जनजाति (ST)	
भारत	2011	2001	2011	2001
भारत में कुल जनसंख्या	2013.78	1665.76	1042.81	835.61
भारत की जनसंख्या से अनुपात	16.63%	16.22%	8.08%	8.14%
देश में सर्वाधिक आबादी वाला राज्य	उत्तरप्रदेश	उत्तरप्रदेश	मध्यप्रदेश	मध्यप्रदेश
देश में सर्वाधिक अनुपात वाला राज्य	पंजाब	पंजाब	मिजोरम	मिजोरम
राजस्थान में (लाखों में)				
राजस्थान में कुल जनसंख्या	122.22	96.94	92.39	70.98
राज्य की जनसंख्या से अनुपात	17.83%	17.16%	13.48%	12.56%
राज्य का अनुपात की दृष्टि से देश में स्थान	8वाँ	9वां	13वाँ	13वाँ
राज्य में सर्वाधिक आबादी वाले जिले	जयपुर/गंगानगर	जयपुर/गंगानगर	उदयपुर (15%) बांसवाड़ा	उदयपुर बांसवाड़ा
सर्वाधिक अनुपात वाले जिले	श्रीगंगानगर (36.1) हनुमानगढ़ (27.8)	श्रीगंगानगर हनुमानगढ़	बांसवाड़ा डूंगरपुर	बांसवाड़ा डूंगरपुर
न्यूनतम आबादी वाले जिले	डूंगरपुर/प्रतापगढ़	डूंगरपुर बांसवाड़	बीकानेर नागौर	बीकानेर नागौर
न्यूनतम अनुपात वाले जिले	डूंगरपुर बांसवाड़ा	डूंगरपुर बांसवाड़ा	नागौर (0.3%) बीकानेर	नागौर बीकानेर

Scanned by CamScanner

Notes

PAGE NO. :
DATE : / /

1. मीणा :-

→ जन जातियों में प्रथम स्थान —— सर्वाधिक —— जयपुर

— का शाब्दिक अर्थ —— मछली

— का पवित्र ग्रंथ —— मीनपुराण
↳ रचना — मगर मुनि ने

— दो भागों में
1. जमींदार
2. चौकीदार

— मुखियां को पंच पटेल कहते हैं।

— कच्चे घरों को टापरा / छपरा कहते हैं।

— औरतों की ओढ़नी — तारा भात की ओढ़नी

— गले का आभूषण — खुगाली

— प्रिय पक्षी — मोर

— कच्चे घरों में मोर - मोरनी के चित्र बने होते हैं जिन्हे माण्डने कहते हैं।

— आराध्य देव — गौतम ऋषि (भूरिया बाबा)

Scanned by CamScanner

1. भील :-

- जन जातियों में दूसरा स्थान — सर्वाधिक — उदयपुर
- कर्नल टॉड ने भीलो को **वन-पुत्र** कहा।
- का शाब्दिक अर्थ — तीर-चलाने वाला
- रण घोष — **फाई रे — फाई रे**
- घरों को 'कू' कहते हैं।
- बहुत सारे सीधे पाल कहलाते हैं। पाल का मुखिया पालकी होता है।
- दंग धोती को — "देपाडा"
- दीली धोती को — "खोमलू"
- शीर का साफा — "पोत्या"
- महिलाओं के अधोवस्त्र — कछाबू व अंगोछा
- में विवाह प्रथा को **लीला मोरियां** कहा जाता है।
- वैवाहिक देवी को — भराड़ी
- को पथरक्षक देवी — पथवारी कहते हैं।
- मृत्यु भोज को — लोकाई
- कृषि के प्रकार — **चीमाता / दजिंया / सुमिंग / वालरा**

Scanned by CamScanner

होली के अवसर पर
↑

- नृत्य — गैर, गवरी, राई, नैजा, युद्ध, हाथीमना, द्विचकी
↓
लोक नृत्य (राज का सबसे प्राचीन लोकनाट्य)

→ बैणेश्वर मेला — डूँगरपुर — आदिवासियों का कुंभ
↓
सोम, जाखम, माही नदी के किनारे

- भील क्षेत्र को — भोमट / मगरा

- प्रमुख पेय पदार्थ — ताड़ी / महुड़ी — भीलों के सोमरस

- पवित्र वृक्ष — महुवा — कल्प वृक्ष

कांडी शब्द — अपमान सूचक शब्द
↓
अर्थ — तीर-चलाने वाला

- पाड़ा शब्द → सम्मानसूचक शब्द
↓
अर्थ → शक्तिशाली

- **माणिक्य लाल** आदिम जातिशोध संस्थान, उदयपुर, भीलों की संस्कृति बचाने का कार्य करती है।

Scanned by CamScanner

Notes

PAGE NO. :
DATE : / /

गरासिया :-

- जन जातियों में तीसरा स्थान — सर्वाधिक — सिरोही
- यदि कोई भील गरासिया स्त्री से विवाह कर ले तो "भील गरासिया" कहलाता है।
- सम्मान जनक व्यक्ति की याद में बनाया गया स्मारक हुरे कहलाता है।
- इस जन जाति में मोर व बंदर का मांस लोकप्रिय है।
- गरासिया जन जाति स्वयं को चौहान राजपूतों का वंशज मानती है।
- यह जन जाति स्वयं की उत्पत्ति माउण्ट आबू के अग्नि कुण्ड से मानती है।
- ✗ केवल इसी जाति को सरकार ने आदिम जन जाति समूह में रखा है।
- ✗ बस्ती को → सहराना, गांव को → सहरोल
- ✗ कुलदेवी — कोड़िया देवी
- ✗ कपिल धारा का मेला — "सहरियों का कुंभ" — कार्तिक पूर्णिमा पर
- ✗ विवाहित महिला एवं विशेष वस्त्र रैजा पहनती है।
- माउण्ट आबू की नक्की झील को पवित्र स्थान मानते हैं।
- घर — घेर, गांव की सबसे छोटी इकाई — फालियां

Scanned by CamScanner

Notes

Ram Saini
7568305710

PAGE NO. :
DATE : / /

सांसी

- सर्वाधिक — भरतपुर
- यह जनजाति दो भागों में बंटी हुई है — बीजा व माला।
- अपने विवाद का निपटारा हरिजनों से करवाते हैं।
- नारियल के गोले आदान-प्रदान करना ही सगाई की रस्म होती है।

कंजर

- सर्वाधिक — हाड़ौती क्षेत्र — कोटा
- सर्वाधिक बोलने वाली जन जाति।
- चौथ माता तथा हनुमान जी के पक्के भगत होते हैं।
- चोरी करने से पहले मंदिर में जाकर एक रस्म अदा करते है जिसे पाती-मागना कहते हैं।
- हाकिम राजा का प्याला लेकर झूठ नही बोलते।
- मरे हुऐ व्यक्ति के मुंह मे शराब डालते हैं।
- इनके घरों में पिछे की ओर दरवाजे / खिड़कियां नही होती।
- इस जनजाति को **आटिया-साटिया** भी कहते हैं।

Scanned by CamScanner

राजस्थान में प्रमुख प्रथाएं

Notes

PAGE NO.:
DATE: / /

1. दहेज प्रथा :-

- 1961 में दहेज निवारण अधिनियम पारित किया गया
- दहेज वह धन या सम्पत्ति होती है जो विवाह के अवसर पर वधु पक्ष द्वारा वर पक्ष को दी जाती है।

2. दास प्रथा :-

- दास प्रथा पर रोक 1562 में अकबर ने लगाई
- लार्ड विलियम बैंटिंग ने दास प्रथा निवारण अधिनियम पारित किया
- इस नियम के तहत सर्वप्रथम रोक 1832 में कोटा रियासत ने लगाई
- महारावल झाला मदनसिंह के काल में

बेगार प्रथा

- वह कार्य जिसके प्रति मेहनताना प्राप्त नहीं होता है, बेगार प्रथा कहलाती है।
- बेगार ब्राह्मण व राजपूत लेते थे।

पर्दा प्रथा :-

- हिन्दू धर्म में नैतिक नियम।
- मुस्लिम धर्म में धार्मिक नियम।
- हिन्दुओं में सर्वाधिक राजपूतों में प्रचलित प्रथा।

सतीप्रथा / सहगमन / सहमरण / अन्वारोहण प्रथा

- 860 ई० के घटियाला शिलालेख — जोधपुर से जानकारी मिली।
- राणुका — पत्नि सम्पल देवी राज० की प्रथम सती थी।
- राज० की अंतिम सती रूप कंवर को माना जाता है।
- 1822 में बूंदी रियासत में गैर कानूनी घोषित किया।
- 1828 में राजा राममोहन राय ने ब्रह्म समाज की स्थापना की।
- 1829 ई० में लार्ड विलियम बैंटिंग ने सती प्रथा निवारण अधिनियम बनाया
- इस नियम के तहत सर्वप्रथम रोक कोटा रियासत में लगी।

Scanned by CamScanner

Notes

PAGE NO. :
DATE : / /

6 विधवा विवाह प्रथा :-

- ईश्वर चन्द्र विद्यासागर के प्रयासों से लार्ड डलहौजी ने विधवा अधिनियम 1856 में पारित
- विधवा विवाह पुस्तक की रचना "चांद करण शारदा ने की थी।

7. समाधि प्रथा :-

- " जीते जी जल/भूमि में मृत्यु को धारण कर लेना"
- सर्वप्रथम जयपुर के पॉलिटिकल एजेन्ट लुडलो के प्रयासों से 1844 में
- रामसिंह IInd के काल में गैर-कानूनी घोषित किया।
- 1861 में समाधिप्रथा पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया गया।

8. डाकन प्रथा :-

- सर्वाधिक प्रचलन आदिवासियों में
- मेवाड़ के शासक स्वरूपसिंह के काल में 1853 ई० में मेवाड़ भील कोर के कमाण्डर जे०सी०(J.C) ब्रुक ने डाकन प्रथा पर रोक लगाई

9. बाल विवाह प्रथा :-

- बाल विवाह राज० में अधिकतर वैशाख शुक्ला तृतीया को होते हैं।
  ↓
  (आखातीज / अक्षय तृतीया / अबुझसावा)
- बाल विवाह को रोकने के लिए सर्वप्रथम प्रयास अकबर ने किया
- 1929 में अजमेर के हरविलास शारदा ने केन्द्र सरकार को बाल-विवाह निरोधक अधिनियम बनाकर भेंट किया। जो 1930 में "शारदा एक्ट" के नाम से समस्त देश में लागू हुआ।

10. कन्या-वध प्रथा :-

- सर्वाधिक प्रचलन मारवाड़ में क्षत्रिय समाज में।
- हाड़ौती के पॉलिटिकल एजेंट विलकिंसन के प्रयासों से लार्ड विलियम बैंटिक ने सर्वप्रथम राज० में 1833 में कोटा व 1834 में बूंदी में गैर कानूनी घोषित किया गया।

Scanned by CamScanner

Notes

11. त्याग प्रथा :-

- सर्वाधिक प्रचलन मारवाड़ के क्षत्रीय में।
- चारण — राजपुत राजाओं के वीर रस की गाथा सुनाना।
- भाट — वंशावली रखना। (इन्हें नागा, बड़वा, राव भी कहते हैं।)
- रावा — ढोल बजाना।

- इसी प्रथा से कन्यावध को बढ़ावा मिला।
- 1841 ई० में वाल्टर कृत राजपुत हित कारिणीसभा के द्वारा इस पर रोक लगाया गया।

12. अनुमरण / महासती :-

- अपने पति की मृत्यु के बाद पति की चिंता के साथ न जलकर पति की शव वस्तु के साथ सती होना महासती / अनुमरण कहा जाता है। उदा० — उमादे (रूठी रानी)

13. नाता प्रथा :-

- सर्वाधिक प्रचलन आदिवासियों में।
- नाता विवाह का एक प्रकार नहीं है, नाता सम्बधों का एक प्रकार है।
- नाते की महिला दिन में नहीं रात में आती है।
- सामने वाले दरवाजे से नहीं, पिछे वाले दरवाजे से आती है।

14. झगड़ा प्रथा :-

- सर्वाधिक प्रचलन मेवाड़ आदिवासियों में
- "महिला के इससे पति द्वारा पहले पति को दी गई राशि" झगड़ा कहलाती है।

15 छेड़ा प्रथा :-

- महिला अपनी ओढ़नी का पल्लू फाड़कर अपने पति को उपहार स्वरूप 1 रु० बांधकर उसे देकर हमेशा-2 के लिए जोड़ कर चली जाती है।
- तालाक की ओढ़नी का सर्वाधिक प्रचलन आदिवासियों में।

Scanned by CamScanner

Notes

PAGE NO. :
DATE : / /

16. **नुक्ता प्रथा :-**

- "मरे हुये आदमी / औरत की याद में दिया गया भोजन नुक्ता कहलाता है। इसे मौसर, खर्च, बॉरहता भी कहा जाता है।

- जीवित मृत्यु भोज को जौसर कहा जाता है।

17. **बैकुंठी प्रथा :-**

- सम्माननीय / पूजनीय / आदरणीय व्यक्ति की मृत्यु के बाद शव को ढोल / नगाड़ो के साथ श्मसान तक ले जाना बैकुंठी कहलाता है।

- अर्थी पर डाले गये रुपयों को "बखेर" कहते हैं।
- श्मसान भूमि से एकत्रित अस्थियाँ "फुल-चुगना" कहलाती हैं।

18. **डावरिया प्रथा :-**

इस प्रथा में राजा-महाराजा व जागीरदारों द्वारा अपनी लड़की की शादी में दहेज के साथ कुछ कुंवारी कन्याएं भी दी जाती हैं, जिसे डावरियाँ प्रथा कहते हैं।

ध्यान रखने हेतु :-

- डाकन प्रथा — 1853 — M.B.C कमाण्डर जे०सी० ब्रुक — स्वरूपसिंह मेवाड़ शासक
- विधवा विवाह — 1856 — ईश्वरचन्द्र विद्यासागर — लार्ड डलहौजी

- समाधि प्रथा — 1861 — जयपुर पॉलिटिकल एजेंट लुडलो — रामसिंह II का काल
- दहेज प्रथा — 1961

- सती प्रथा — 1822 बूंदी गैर कानूनी — 1829 में रोक — लार्ड विलियम बैंटिक — कोटा सर्वप्रथम
- बालविवाह — 1929 — अजमेर हरविलास शारदा — "शारदा" एक्ट — 1930

- कन्यावध — 1833 कोटा — 1884 बूंदी

Scanned by CamScanner

राजस्थान की प्रमुख वेशभूषा एवं आभूषण

Notes

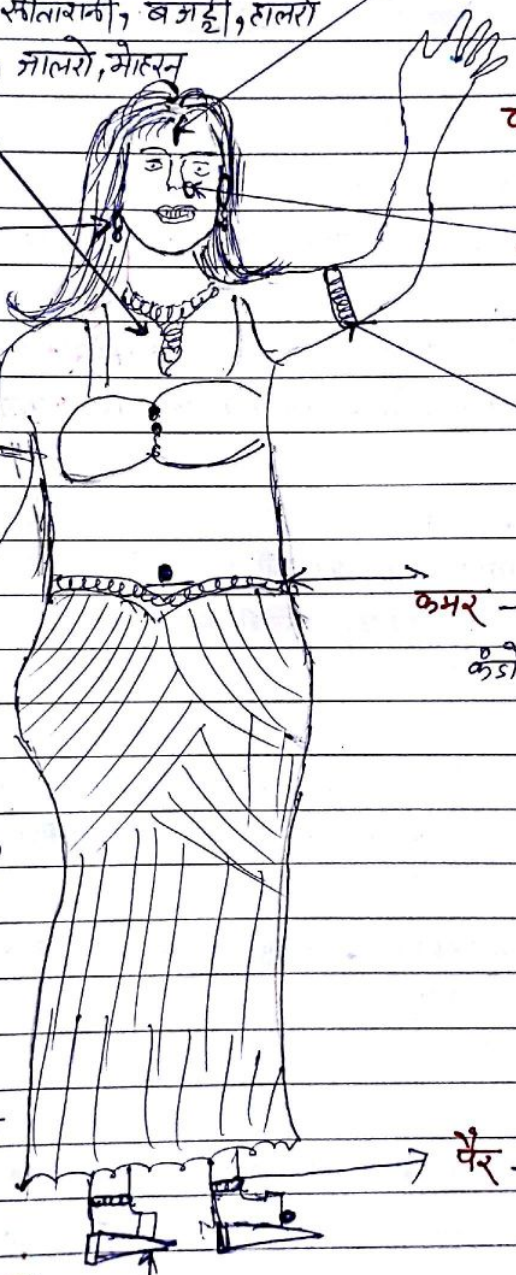

PAGE NO. :
DATE : / /

मंगल सूत्र, बजन्टी, गोल्या
सुगाली, गुली बंद, जंतर, रानीहार, चैन,
गले :- हार, कंठी, मटरमाला, कुस्सी, सालर, हँसली
फेंचलडी, तिमणीया, सल्ली, सीतारानी, बजट्टी, हालरो
पोत, हाकर, चंपाकली, पैंचलडी, झालरो, मोहरन

सिर :- बोरला, शीशफूल, साँकली
रखडी, माँगटीका, ताबित
मेमंद

दांत :- रखन, मेख, चूंप

कान → कनौती, सुरलिया, टॉप्स
झुमका, ओगणिया, कुण्डल
बाले, पीपल पत्ता, पत्ती
अगोट्या, झेला, भमेला

नाक :- चोंप, बाली, काँटा, लौंग
लटकन, नथ, बेसरी, चूनी
नाली, वारी

कलाई :-
चूड़ी, चुंडा, कडा, पाटला
कंगन, बंगडी, खंची
तमला, पट, गोखरू

बाजू :- बाजूबंद, टड्डा, अणत
नोगर, नवरतन, गजरा

कमर – तगडी, करधनी, कंदोर,
कंडोर, कोंदती करतनी

अंगुली :- अंगुठी, बींटी, मुंदडी,
छल्ला, दामणा, आरसी

Note :-
आदिवासी महिलाओं के वस्त्र
① जामसाई साडी – विवाह के समय
② नान्दणा / नानड़ा
③ रेनसाई – अंगोछा साड़ी
④ लूगडा – विवाहित महिलाओं का वस्त्र
⑤ ज्वार भाँती के ओढ़नी / लहर भांत की
ओढ़नी / तारा भांत की ओढ़नी

पैर – पायल, पाइजेब, तोड़ीया,
कडला, लंगर, सांकर, नेवरी
जोधपुरी जोड़

अंगुली – बिछिया / बिछुडी / चुटकी

↓
... महिलाओं में लोकप्रिय

Notes

PAGE NO. :
DATE : / /

Note

शुभ अवसरों पर बसंती पगड़ी पहनी जाती है
लड़ाई में केसरीया पगड़ी पहनी जाती है

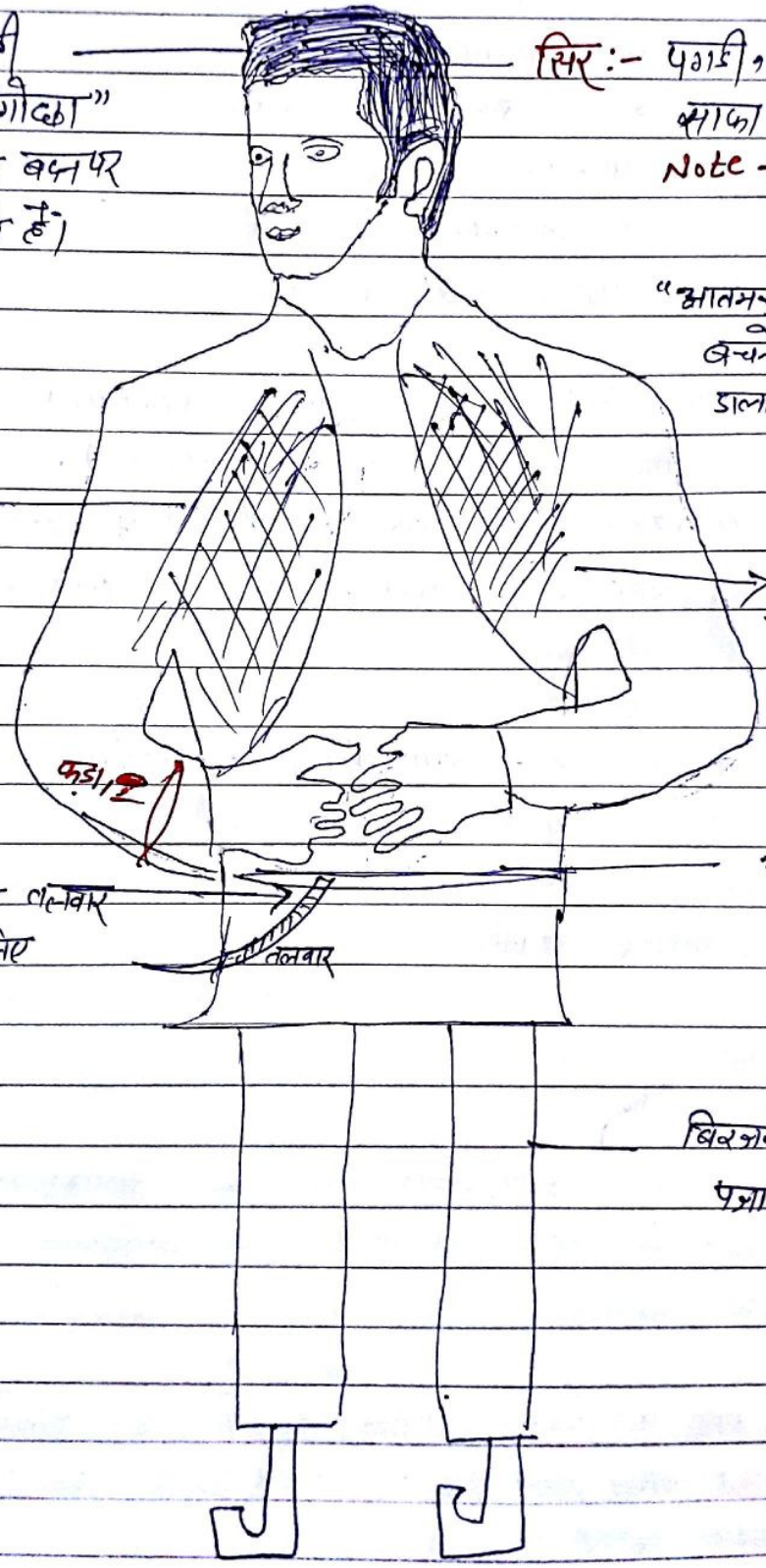

Note आदीवासी सिर पर "अंगोछा" बांधते हैं। व बदन पर अंगरखा पहनते हैं।

सिर :- पगड़ी, पांग, पेंचा, बागा, साफा, टोपी

Note - भील पुरुष - "पोतिया"

"आतमसुख" → तेज सर्दी से बचने के लिए अंगोछे पर डाला गया वस्त्र

पछेवड़ा - सर्दी से बचने के लिए काम में लिए जाने वाला वस्त्र

चोगा - अंगरखी के ऊपर पहने जाने वाला वस्त्र
↓
चोली / अचकन

कड़ा

अंगरखी → बदन पर पहने जाने वाली

पटका - तलवार बांधने के लिए

तलवार

बिरजस / ब्रीचेस / चूड़ीदार पजामा

Scanned by CamScanner

राजस्थान के प्रमुख साहित्य एवं कला, संस्कृति अकादमी

PAGE NO.:
DATE: / /

Notes

1. राजस्थानी भाषा का ~~उद्गम~~ उद्भव शौरसेनी के गुर्जर अपभ्रंश से मानी जाती है।

राजस्थानी साहित्य के विभिन्न प्रकार

1. **ख्यात साहित्य :-**

अर्थ → प्रसिद्धी

- इन साहित्यों के माध्यम से राजस्थान के राजाओं ने अपने वंश की प्रसिद्धी को प्रदर्शित किया।

(अ) मुहणोत नैणसी री ख्यात — जोधपुर नरेश जसवंतसिंह के जीवन का वर्णन
(ब) मुण्डियार री ख्यात — मुण्डियार गाँव के चारणों द्वारा रचित ख्यात
(स) बाँकी दास री ख्यात — जोधपुर शासक मानसिंह राठौड़ के समय की ख्यात
(द) दयाल दास री ख्यात — बीकानेर शासक रतनसिंह के समय की ख्यात

2. **प्रकाश :-**

- "किसी व्यक्ति की निजि उपलब्धियों पर प्रकाश डालने वाली कृति"

उदा० पाबूजी के जीवन पर प्रकाश — पाबू प्रकाश — लेखक आसिया मोडजी

3. **वात :-**

- अर्थ — कहानी
- किसी ऐतिहासिक पुरुष की जीवनी को कहानी की तरह लिखना"

उदा०

- जालौर शासक कान्हड़देव के पुत्र वीरमदेव सोनगरा री वात।

4. **रासो :-**

" किसी विशेष शासक / वंश पर किया गया विशेष वर्णन"

उदा०

- चौहान शासक पृथ्वीराज चौहान के जीवन पर — चन्दबरदाई लिखित पृथ्वीराजरासो
- अजमेर शासक विग्रहराज के जीवन पर लिखी बीसलदेवरासो — नरपति नाल्ह
- खुमाणरासो — दलपत विजय — मेवाड़ का इतिहास।

Scanned by CamScanner

Ram Saini
7568305710

5. वचनिका :-

"गद्य-पद्य दोनों का समावेश"

- इसमें सम्बन्धित किरदार के वचनों का विशेष संग्रह होता है।

उदा० - अचलदास खींची की वचनिका।

6. वेलि साहित्य:-

- भक्ति पर विशेष बल दिया जाता है।"
- इसके माध्यम से धार्मिक भक्ति, उदारता आदि घटनाओं पर प्रकाश डाला जाता है।
- उदा० वेलि किसन रुकमणी - बीकानेर राजकुमार पृथ्वीराज राठौड़

7. विगत :-

- रियासतों के सामाजिक व धार्मिक पक्षों का लेखन"

उदा० मारवाड़ रा परगना री विगत — मुहणोत नैणसी।

8. मरस्या :-

- "व्यक्ति की मृत्यु पर गाये जाने वाला प्रशंसात्मक कथनाक"

9. दवावैत :-

- "दवावैत उर्दू व फारसी मिश्रित राजस्थानी भाषा को कहा जाता है।"
- यह एक कलात्मक शैली है।
- अधिकतर यह पत्र लेखन में उपयुक्त होती है।

⇒ राजस्थानी भाषा की प्रमुख शैलियां :-

1. डिंगल भाषा शैली :-

- डिंगल पश्चिम राज० में लेखन शैली के रूप में प्रसिद्ध हुई।
- इसमें वीर रस प्रधान साहित्यों को लिखा गया।
- यह मारवाड़ की साहित्य शैली है जैसा बोला जाता है वैसा ही लिखा जाता है।
- डिंगल भाषा का प्रयोग सर्वप्रथम कुशललाभ ने अपनी रचना पिंगल शिरोमणी में किया।
- राज० में चारण कवि बांकीदास और सूर्यमल्ल मिश्रण ने अपनी रचनाओं में डिंगल भाषा का प्रयोग किया है।
- राजरूपक, अचलदास खींची री वचनिका, राव जैतसी रो छंद, ढोला मारू रा दूहा।

Scanned by CamScanner

(द) पिंगल भाषा शैली :-

- पिंगल पूर्वी राजस्थान की साहित्य शैली रही है।
- ब्रज भाषा का समावेश
- अधिकांश रासो साहित्य का लेखन।
- भाटों द्वारा रचित राज० की विशिष्ट काव्य शैली।
- भाटों का प्रमुख कार्य :- अपने से सम्बंधित व्यक्तियों की वंशावली रखना।
- पिंगल भाषा का भाट वंशावलियों में उपयोग किया जाता है।
- पृथ्वीराज रासो, रतन रासो, विजयपाल रासो, वंश भास्कर, खुमाण रासो।

साहित्य में प्रथम :-

(अ) राजस्थान की प्राचीनतम रचना — भरतेश्वर बाहुबलि घोर — वज्रसेनसूरि — 1168 ई०
(भरत और बाहुबलि के बिच के युद्ध का वर्णन)

(ब) संवतोल्लेख वाली प्रथम राजस्थानी रचना — भरत बाहुबलि रास — शालिभद्र सुरि

(स) वचनिका शैली की प्रथम सशक्त रचना — अचलदास खीची री वचनिका — शिवदास गाड़ण

(द) राजस्थानी भाषा का पहला उपन्यास — कनक सुन्दर — शिवचन्द्र भरतिया

(य) राजस्थानी का प्रथम नाटक — केसर विलास — शिवचन्द्र भरतिया

(र) राजस्थानी में प्रथम कहानी — विश्रांत प्रवास → शिवचन्द्र भरतिया।

(ल) स्वातंत्र्योत्तर काल का प्रथम राजस्थानी उपन्यास — आभैपटकी — श्रीलाल नथमल जोशी

व) आधुनिक राजस्थानी की प्रथम काव्यकृति — बादली — चन्द्रसिंह बिरकाली।

Scanned by CamScanner

कृति	रचनाकार

Notes

PAGE NO. :
DATE : / /

1. कुवलयमाला — जैन मुनि उद्योतन सूरि

2. नेमिनाथ बारहमासा — कवि पाल्हण

3. पृथ्वीराज रासो — चन्दबरदाई — पिंगल भाषा में

4. बीसल देव रासो — नरपति नाल्ह — विग्रहराज-चतुर्थ व उनकी पत्नी राजमती की प्रेमगाथा का विस्तृत वर्णन

5. रणमल छंद — श्रीधर व्यास — पाटन के सूबेदार मुज्जफर शाह व ईडर के राठौड़ रणमल के युद्ध का वर्णन
दुर्गा सप्तशती

6. अचलदास खींची री वचनिका — शिवदास गाडण — (1430-35 ई०) — डिंगल ग्रंथ में मांडू के सुल्तान होशंगशाह एवं गागरौन शासक अचलदास खिंची के मध्य युद्ध (1423 ई०) का वर्णन / चारणों द्वारा रचित गद्य साहित्य की प्रथम रचना

7. पृथ्वीराज विजय — जयानक — पृथ्वीराज चौहान के वंशक्रम का वर्णन

8. विजयपाल रासो — नल्लसिंह — पिंगल भाषा — विजयगढ़ (करौली) के राजा विजयपाल का विस्तृत वर्णन

9. हम्मीर महाकाव्य — मुनि नयनचन्द्र सुरि — रणथम्भौर के चौहानों का वर्णन

10. ढोला मारू रा दूहा — कवि कल्लोल — डिंगल भाषा — मरवण की प्रेम व्याख्यान काव्य वर्णन।

11. कीरभायण — कवि बृघजी आसिया — बादर ढाढी का काव्य
रचना महाराजा मानसिंह के शासन में हुई
पहले ये रचना "बादर ढाढी की नीसाणियां" कहलाती थी।

Scanned by CamScanner

Notes

12. शिशुपाल वध — महाकवि माघ — भीनमाल (जालौर) — जन्म

मध्यकालीन साहित्य

1. (अ) "राव रिणमल रो रूपक"] गाडण पसाइत
गुण जोधायण

2. कान्हडदे प्रबंध — पद्मनाभ — जालोर-चौहान अखैराज के आश्रित कवि।

3. "राव जैतसी रो छंद" — बीठू सूजा — बीकानेर शासक राव बीका और राव लूणकरण के सम कालीन कवि।

4. (अ) हाला झाला री कुंडलियाँ — बारहठ ईसरदास — झाला रायसिंह और हाला जसाजी के बीच युद्ध का वर्णन
(ब) हरिरस

5. "विरुद्ध छतहरी"
"किरतान बावनी"
"सुलणा राव अमरसिंह गजसिंह छोतरी] — दुरसा आढ़ा — मेवाड़ के राणा प्रताप, राव चन्द्रसेन और राव सुरतान के देश प्रेम का ओजस्वी चित्रण

6. "राठौड़ रतन सिंह री वेलि — दूदा विसराल — जैतारण के शासक रतन सिंह का मुगलों के साथ युद्ध का वर्णन

7. "गजगुण रूपक बंध"
"राव अमरसिंह रा दूहा"
"विवेक वार्ता"
"छंद गोरखनाथ"
"गजगुण रूपक बंध"] — केशवदास गाडण — जोधपुर महाराजा गजसिंह प्रथम के कृपापात्र / डिंगल भाषा कवि।

8. "संगत रासो" — गिरधर आसिया — महाराणा प्रताप के छोटे भाई शक्ति सिंह के पराक्रम का वर्णन

Scanned by CamScanner

Notes

PAGE NO. :
DATE : / /

9. "चेतावनी रा गीत"
"बाँकीदासरी ख्यात"
"बाँकीदास ग्रंथावली" — बाँकीदासजी — जोधपुर महाराजा मानसिंह के कृपापात्र

10. ~~अबुल~~ "आइने अकबरी"
"अकबरनामा" — अबुलफजल — अकबर के नवरत्नों में एक
- नागौर निवासी - पिता - शेख मुबारक

11. सूरज प्रकाश — करणीदान कविया — डिंगल भाषा का ग्रंथ
जोधपुर महाराजा अभयसिंह के आश्रित कवि।

12. "राज रूपक" — वीरभाँण — ये भी

13. एकलिंग महात्म्य — कान्हा व्यास — गुहिल शासकों की वंशावली का वर्णन

14. पद्मावत — मोहम्मद मलिक जायसी — (1543 ई०) महाकाव्य में अलाउद्दीन खिलजी व मेवाड़ के शासक रावल रतनसिंह के मध्य युद्ध (1301) का वर्णन

15. "हम्मीर हठ"
"सुर्जन चरित्र" — चन्द्रशेखर — बूंदी शासक राव सुर्जन के आश्रित कवि।

16. "रुकमणी हरण"
"नागदमण" — कवि सायांजी — डिंगल ग्रंथ
ईडर नरेश राव कल्याणमल के आश्रित कवि।

17. "माधवानल चौपाई"
"ढोला मारवणीरी चौपई"
"पिंगल शिरोमणी" — कुशल लाभ

Scanned by CamScanner

Notes

PAGE NO. :
DATE : / /

18. " गजउद्धार" — जोधपुर महाराजा अजीतसिंह — जोधपुर महाराजा जसवंत सिंह के पुत्र

19. अनुप संस्कृत पुस्तकालय की स्थापना — बीकानेर महाराजा अनुपसिंह — बीकानेर महाराजा कर्णसिंह के पुत्र।
— "महामरातिब की उपाधी दी — औरंगजेब ने।

20. भाषा भूषण / आनन्दविलास / अनुभवप्रकाश / सिध्दान्त बोध / चन्द्र प्रबोध / सिद्धांत सार / नायिका भेद — जोधपुर महाराजा जसवंतसिंह (प्रथम) — डिंगल व पिंगल भाषा के कवि।

21 " वचनिका राठौड़ रतन सिंह महेसदासोत री" — जग्गा खिड़िया — रतलाम नरेश रतनसिंह के दरबारी। धरमत के युद्ध (1715) का वर्णन

22. " हम्मीर रासो" — कवि जोधराज — महाराजा चन्द्रभान के आश्रित कवि
— हम्मीरदेव की वंशावली व अलाउद्दीन खिलजी के युद्ध का वर्णन।

23. " बीकानेर रा राठौड़ री ख्यात — दयालदास सिंदायच — जोधपुर व बीकानेर राठौड़ का वर्णन

२४. "खुमाण रासो" — दलपत विजय — मेवाड़ शासक बापारावल से लेकर महाराजा राजसिंह तक का वर्णन

२5. ब्रजनिधि — महाराजा सवाई प्रतापसिंह — जयपुर महाराजा सवाई माधवसिंह के पुत्र।

26. "वेलि क्रिसन रुकमणी री" / कल्ला रायमलोत री कुंडलियां — पृथ्वीराज राठौड़ — "उड़ना राजकुमार"
— बीकानेर नरेश राव कल्याणमल के पुत्र
— सम्राट अकबर के कृपापात्र
ये "पीथल" के रचना करते थे

Scanned by CamScanner

36. हम्मीरमाला — हमीरदानरतनु

Notes

PAGE NO.:
DATE: / /

** इरसा आढ़ा ने इस ग्रंथ को 5वाँ वेद / 19वाँ पुराण बताया है।

27. "जसवंत ~~मुरारीदान~~" जसोभूषण — कविराजा मुरारीदान — जोधपुर नरेश जसवंतसिंह के आश्रित कवि।
— सूर्यमल्ल मिश्रण के समकालीन

Note:— इन्होंने कवि सूर्यमल्ल मिश्रण द्वारा लिखित ग्रंथ "वंश भास्कर" को पूरा किया।

28. "पाबू प्रकाश" — मोड़जी आशियां

29. महाराजा मानसिंह — जोधपुर में "पुस्तक प्रकाश" नामक पुस्तकालय की स्थापना की।

30. "रामरासो" — माधोदास दधवाड़िया — जोधपुर महाराजा सूरसिंह के आश्रित कवि।

31. मुहणोत नैणसी — मुंहता नैणसी री ख्यात" — जोधपुर महाराजा जसवंतसिंह प्रथम के
"मारवाड़ रा परगनां री विगत" कृपापात्र
— "राजपुताने का अबुल-फजल"
— "राजपुताने का गजेटियर

32. "वचनिका किशनगढ़ महाराजा रूपसिंह जीरी" — कवि वृन्द — औरंगजेब का दरबारी कवि।

33. "राजरूपक" / एकाक्षरी नाममाला — वीरभाणरतनु — जोधपुर महाराजा अभयसिंह के आश्रित कवि।
भागवत प्रकाश

34. "नागर समुच्चय" — सावंतसिंह (नागरीदास)
" बणी-ठणी"

35. "बिहारीसतसई" — महाकवि बिहारी — जयपुर नरेश मिर्जाराजा जयसिंह का दरबारी कवि

Scanned by CamScanner

विश्वकोषिय ऐतिहासिक काव्य Notes ↓ की संज्ञा

आधुनिक काल के साहित्य एवं साहित्यकार

PAGE NO :
DATE : / /

1 वंश भास्कर (1840 ई०)
वीर सतसई (1857 ई०)] — सूर्यमल्ल मिश्रण — 'आधुनिक राजस्थानी काव्य के नवजागरण के पुरोधा"

– बूंदी नरेश महाराव रामसिंह के आश्रित कवि।

2. डा० गौरी शंकर हीराचन्द्र ओझा (1863–1947 ई०) — भारतीय प्राचीन लिपिमाला ग्रंथ

– "मुहणोत नैणसी री ख्यात" का सम्पादन किया।
– कर्नल जेम्स टॉड की " एनल्स एवं एंटीक्विटीज ऑफ राज०" का हिन्दी में अनुवाद किया।
– राजस्थान का गिब्बन कहा जाता है।
– नाम " गिनीज वर्ल्ड बुक में अंकित हैं।
– 1914 में राय बहादुर की पदवी से सम्मानित।

3. जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन :– Linguistic Survery of India
– 'राजस्थानी" शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग इन्होंने ही किया।
ग्रंथ
– Mordan Vernacular Literature of Northen India

4. वीर विनोद — कविराज श्यामलदास — मेवाड़ महाराणा सज्जनसिंह के कृपापात्र
" कैसर - ए - हिन्द की उपाधि मिली।

5. कर्नल जेम्स टॉड :– [Annals and antiquities of Rajasthan
1929 – Central and Westen Rajpoot states of India
↓
इंग्लैंड निवासी
– राज० इतिहास के 'पितामाह'

Scanned by CamScanner

Notes

PAGE NO.:
DATE: / /

6. चन्द्रप्रकाश देवल :- पागी — साहित्य अकादमी अवार्ड मिला
"उडीक पुराण — ग्रंथ के लिए २००४ में सूर्यमल्ल मिश्रण पुरस्कार
— पद्मश्री से सम्मानित।
२०13 में 23 वे बिहारी पुरस्कार से सम्मानित
2015 — महाराणा मेवाड़ चैरिटेबल फाउण्डेशन ने महाराणा कुम्भा
से सम्मानित किया।

7. बातां री फुलवारी — विजयदान देथा।

8. लीलटांस
धरती धोरां री — ~~कन्हैया~~ कन्हैयालाल सेठिया।
* पीथल एवं पाथल

9. सेनाणी — मेघराज मुकुल

10. टाबरां री बातां
हंू पूकारो दो सा — ~~लक्ष्मी कुमारी चुण्डावत~~

11. एक बीनणी दो बींद — श्रीलाल नथमल जोशी

12. राग मंजरी — पुण्डरी

13. वाणी व सरवंगी — रज्जब

14. सुधि सपनों के तीर — मणि मधुकर

15. बिड़द सिणगार — करणीदान

16. राणा रासौ — दयाल

17. अंशुशाल रासौ — डूंगर सा

18. बुद्धि रासौ — जल्ल

19. चर्चरी — जिनदत्तसुरि।

Scanned by CamScanner

राजस्थानी साहित्य से सम्बधित संस्थाएँ

Notes

PAGE NO. :
DATE : / /

1 राजस्थान राज्य अभिलेखागार :-

- स्थापना – बीकानेर , सन् – 1955 (जयपुर) में थी।
↓
(1960) में बीकानेर में स्थानांतरित करदियागया।

- राज० के इतिहास एवं संस्कृति के विभिन्न स्रोतों को सुरक्षित रखना।

२. राजस्थान साहित्य अकादमी :-

मुख्यालय – उदयपुर
स्थापना – 1958 ई०
-चर्चित पुस्तक – मधुमति (मासिक)
संस्था द्वारा दिये जाने वाला श्रेष्ठ पुरस्कार – "मीरा पुरस्कार"

3. राजस्थान भाषा साहित्य / संस्कृति अकादमी :-

मुख्यालय – बीकानेर
स्थापना – 1983 ई०
-चर्चित पुस्तक – "जागती जोत"
श्रेष्ठ पुरस्कार – सूर्यमल मिश्रण पुरस्कार

-यह पाण्डुलिपियां प्राचीन पुस्तकेपर शोध का कार्य करती हैं।

4. राजस्थान हिन्दी अकादमी ग्रंथ :-

मुख्यालय – जयपुर
स्थापना – 1969 ई०
- यह संस्था भारत सरकार के मानव संसाधन के अन्तर्गत कार्य करती हैं ।
- विश्वविद्यालयी स्तर की पुस्तकों का प्रकाशन करवाती है।

Scanned by CamScanner

Notes

PAGE NO. :
DATE : / /

– संस्था द्वारा प्रकाशित पुस्तकों पर विशेष छूट दी जाती है,

5. राजस्थान संस्कृत अकादमी :-

मुख्यालय – जयपुर
स्थापना – 1980 ई०
सर्वोच्च पुरस्कार – "माघ"
– संस्था संस्कृत के प्राचीन ग्रंथों व संस्कृत भाषा पर शोध का कार्य करती है।

6. राजस्थान ब्रज भाषा अकादमी

Pam Saini
7568305710

– मुख्यालय – जयपुर
स्थापना – 1986 में (भरतपुर)
– ब्रज भाषा के साहित्य व शोध को बढ़ावा देने के लिए स्थापित।
मासिक पुस्तक – ब्रज शतदल

7. राजस्थान उर्दू अकादमी :-

मुख्यालय – जयपुर
स्थापना – 1979 ई०
संस्था उर्दू भाषा के साहित्य व शोध को बढ़ावा देने के लिए स्थापित की गई।

8. राजस्थान सिंधी अकादमी :-

मुख्यालय – जयपुर
स्थापना – 1979 ई०
संस्था सिंधी भाषा के साहित्य व शोध को बढ़ावा देने के लिए स्थापित की गई।
पुस्तक – "रिहाण"

Scanned by CamScanner

9. मौलाना अबुल कलाम आज़ाद फारसी शोध संस्थान :- " कसरे इल्म"

मुख्यालय - टोंक
स्थापना - 1978 ई०

संस्था अरबी फारसी भाषा के साहित्य व शोध को बढ़ावा देने के लिए स्थापित की गई।

10. श्री राम-चरण प्राच्य विद्या पीठ एवं संग्रहालय :-

मुख्यालय - जयपुर
स्थापना - 1960 ई० में।

11. नगर-श्री लोक संस्कृति शोध संस्थान :-

मुख्यालय - चूरू
स्थापना - 1964 ई०

- मुख्य आकर्षण स्थानीय " मुड़िया लिपि" को संरक्षित करना।
- मुड़िया लिपी शेखावटी व बीकानेर अंचल की प्राचीन लिपी है।

13. पं० झाबरमल्ल शर्मा शोध संस्थान :-

मुख्यालय - जयपुर
स्थापना - २००० ई०

- संस्था द्वारा पत्रकारिता से संबंधित विभिन्न शोधों को बढ़ावा दिया जाता है।

14. राजस्थान संगीत नाटय अकादमी :-

मुख्यालय - जोधपुर
स्थापना - 1957 ई०

कार्य :- राज्य में सांगीतिक, नृत्य एवं नाट्य विधाओं के प्रचार-प्रसार।

15. राजस्थान संगीत संस्थान :-

मुख्यालय - जयपुर
स्थापना - 1950

कार्य - विभिन्न वाद्यों नृत्य एवं गायन का प्रशिक्षण देना।

Scanned by CamScanner

1. राजस्थान का एकीकरण
2. राजस्थान की प्राचीन सभ्यताएं
3. राजस्थान में 1857 का स्वतंत्रता संग्राम
4. राजस्थान में किसान आंदोलन
5. राज० में प्रजामण्डल आंदोलन
6. राज के प्रमुख महल, हवेलियां, छतरियाँ, दरगाह व मकबरे
7. राजस्थान में जनजातिय आंदोलन
8. राजस्थान में चित्रकला।

---

16. जयपुर कथक केन्द्र → जयपुर → स्थापना — 1978 ई०

17. भारतीय लोक कला मंडल, उदयपुर, स्थापना — 1952 ई०

18. पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर, स्थापना — 1986 ई०

19. जवाहर कला केन्द्र, जयपुर, स्थापना — 8 अप्रैल 1993
↓
भवन के वास्तुविद् — श्री चार्ल्स कोरिया

20. रूपायण संस्थान, बोरुन्दा (जोधपुर)
↓
निर्देशक — पद्मश्री कोमल कोठारी

21. रविन्द्र मंच सोसायटी, जयपुर
↓
रामनिवास बाग, स्थापना — 15 अगस्त 1963 ई०

22. ललित कला अकादमी, जयपुर
स्थापना — 25 नवम्बर 1957

23. राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट एंड क्राफ्ट्स (जयपुर)
* सवाई रामसिंह द्वारा जयपुर में मदरसा-ए-हुनरी की स्थापना के बाद

24. राष्ट्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली
स्थापना — 1954 ई०

Scanned by CamScanner